mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-04 अंक-244 पृष्ठ-8 मूल्य-3 रूपये

सतना
3 सितंबर 2024 मंगलवार

दैनिक मीडियाऑडीटर

सतना, रीवा से एक साथ प्रकाशित

पाक में सुरक्षा के ...
@ पेज 7

आरएसएस ने कहा- जाति जनगणना संवेदनशील मुद्दा

समाज के विकास के लिए ये करनी चाहिए, चुनाव प्रचार के लिए इसका इस्तेमाल न हो

पलक्कड़ (एजेंसी)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) ने सोमवार को जाति जनगणना को लेकर कहा कि यह लोगों के कल्याण के लिए सही है, लेकिन इसका इस्तेमाल चुनाव प्रचार के लिए नहीं किया जाना चाहिए। समन्वय बैठक के बाद मुख्य प्रवक्ता सुनील आंबेकर ने प्रेस कॉन्फ्रेंस की। जिसमें उन्होंने कहा कि सरकार को सिर्फ डेटा के लिए जाति जनगणना करवानी चाहिए। आरएसएस की अखिल भारतीय समन्वय बैठक हर साल होती है। इस साल यह 31 अगस्त से 2 सितंबर तक केरल के पलक्कड़ में हुई। जिसमें कोलकाता रेप-मर्डर केस और यूनिफॉर्म सिविल कोड पर भी चर्चा हुई। 3 दिन चली बैठक में आरएसएस चीफ मोहन भागवत और सहकार्यवाह दत्तात्रेय होसबोले भी शामिल हुए।

● **बांग्लादेश 'हिंदुओं-अल्पसंख्यकों पर अत्याचार बेहद संवेदनशील मुद्दा'** - बांग्लादेश में हिंदुओं और अल्पसंख्यकों के साथ हुए अत्याचार को लेकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने चिंता जताई है। सरकार बांग्लादेश सरकार से बात करे।

भाजपा सदस्यता अभियान शुरू, पहली सदस्यता मोदी ने ली

कहा- पहले कार्यकर्ता जेल में रहते थे या बेल पर; सत्ताधारियों के जुल्म सहकर यहां तक पहुंचे

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय जनता पार्टी ने सोमवार (2 सितंबर) को 'संगठन पर्व, सदस्यता अभियान 2024' लॉन्च किया। इस मौके पर सबसे पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पार्टी की सदस्यता ली। इसके बाद भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्?डा, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और गृह मंत्री अमित शाह समेत भाजपा के बड़े नेताओं ने फिर से पार्टी की सदस्यता ली।

पीएम मोदी ने कहा कि आज भाजपा का सदस्यता अभियान का एक और दौर शुरू हो रहा है। भारतीय जनसंघ से अब तक हमने देश में एक नई राजनीतिक संस्कृति लाने की कोशिश की है। हम वो लोग हैं जिन्होंने दीवारों पर कमल भी बड़ी श्रद्धा से पेंट किया। हमें विश्वास था दीवारों पर पेंट किया हुआ कमल कभी न कभी दिलों पर भी पेंट हो जाएगा।

पीएम ने आगे कहा कि भाजपा और इससे पहले जनसंघ के कार्यकर्ताओं को लेकर कहा जाता था कि इनका एक पैर रेल में रहता है और दूसरा जेल में। रेल में क्योंकि कार्यकर्ता लगातार भ्रमण किया करते थे। और जेल में इसलिए क्योंकि तब सत्ताधारी एक जुलूस भी नहीं निकालने देते थे। वे हमें जेल में डाल देते थे।

संक्षिप्त समाचार

मोदी कैबिनेट ने किसानों को दी 7 सौगात

● कुल 20,817 करोड़ रुपये के निवेश के साथ

नई दिल्ली (एजेंसी)। मोदी कैबिनेट ने सोमवार को किसानों के लिए बड़ी घोषणा करते हुए 13,966 करोड़ रुपये की कुल लागत वाली सात योजनाओं को मंजूरी दी। सरकार ने कहा कि किसानों के जीवन को बेहतर बनाने और उनकी आय बढ़ाने के उद्देश्य से यह फैसले लिए गए हैं। केंद्रीय मंत्रिमंडल ने बैठक में कृषि से जुड़ी गतिविधियों को बढ़ावा देने और देश भर में खाद्य सुरक्षा बढ़ाने के लिए सात महत्वपूर्ण निर्णयों को मंजूरी दी। केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने सरकार के इस फैसले की जानकारी देते हुए बताया कि ये उपाय कृषि क्षेत्र को समर्थन देने, सतत विकास को बढ़ावा देने और सभी नागरिकों के लिए भोजन की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए डिजाइन किए गए हैं।

आप विधायक अमानतुल्लाह को ईडी ने गिरफ्तार किया

● दिल्ली वक्फ बोर्ड मनी लॉन्ड्रिंग केस में घर पर 4 घंटे पूछताछ

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने सोमवार को आम आदमी पार्टी (आप) के विधायक अमानतुल्लाह खान को अरेस्ट कर लिया है। ईडी दिल्ली वक्फ बोर्ड मनी लॉन्ड्रिंग केस में पूछताछ के लिए सुबह अमानतुल्लाह के घर पहुंची थी। सुबह 8:15 बजे से उनसे घर में ही पूछताछ और जांच की जा रही थी। 4 घंटे पूछताछ के बाद दोपहर 12.15 बजे ईडी अफसर उन्हें अरेस्ट करके ऑफिस ले जा रहे हैं।

आईसी 814 सीरीज में आतंकियों के हिंदू नामों पर विवाद

कंटेंट पर जवाब मांगा

नईदिल्ली (एजेंसी)। ओटीटी सीरीज आईसी 814 को लेकर जारी विवाद के बीच नेटफ्लिक्स की कंटेंट हेड मोनिका शेरगिल को सूचना और प्रसारण मंत्रालय ने तलब किया है। मंत्रालय ने ओटीटी सीरीज के विवादास्पद पहलुओं पर नेटफ्लिक्स से स्पष्टीकरण मांगा है। नेटफ्लिक्स 2 सितंबर को मंत्रालय के सामने अपना पक्ष रखेगा। आईसी 814 29 अगस्त को नेटफ्लिक्स पर रिलीज हुई है जो कि कंधार विमान हाईजैक पर बेस्ड है। इस विमान को हाईजैक करने वाले आतंकियों के नाम इब्राहिम अख्तर, शाहिद अख्तर, सन्नी अहमद, जहूर मिस्त्री और शाकिर थे लेकिन वेबसीरीज में उनके नाम बदल दिए गए हैं।

नए अध्ययन में वैज्ञानिकों की चेतावनी

न संकेत न लक्षण लोगों को बैठे-बिठाए हो रहा कैंसर

यूके/नईदिल्ली (एजेंसी)। एक नई स्टडी में सामने आया है कि लम्बे लोगों में कैंसर होने का खतरा ज़्यादा होता है। यह स्टडी 2 सितंबर, 2024 को प्रकाशित हुई है।

● **लम्बे लोगों को कैंसर का ज्यादा खतरा-** वर्ल्ड कैंसर रिसर्च फंड ने कहा है कि इस बात के सबूत हैं कि लम्बे लोगों में अग्न्याशय, अंडाशय, प्रोस्टेट, गुर्दे, त्वचा (मेलेनोमा), ब्रेस्ट मेनोपॉज के पहले और बाद), बड़ी आंत और गर्भाशय (एंडोमेट्रियम) जैसे कैंसर होने की संभावना ज्यादा होती है।यूके मिलियन वीमेन स्टडी में पाया गया है कि जिन 17 तरह के कैंसर पर रिसर्च की गई, उनमें से 15 कैंसर लम्बे लोगों में ज्यादा पाए गए।

● **क्यों है इन्हें ज्यादा खतरा-** लम्बे लोगों में कैंसर होने की संभावना ज़्यादा होने का एक कारण यह है कि उनके शरीर में कोशिकाओं की संख्या ज़्यादा होती है। जैसे, एक लम्बे व्यक्ति की बड़ी आंत भी लम्बी होती है, जिसमें कोशिकाओं की संख्या ज़्यादा होती है और इससे उसे बड़ी आंत का कैंसर होने का खतरा बढ़ जाता है।

● **पुरुषों को कैंसर का ज्यादा खतरा-** कुछ शोधों के अनुसार, लम्बे लोगों में कोशिकाओं की संख्या ज़्यादा होने के कारण ही उन्हें कैंसर होने की आशंका ज्यादा होती है। यही कारण है कि पुरुषों में महिलाओं की तुलना में कैंसर होने की आशंका ज्यादा होती है।

● **जितनी ऊंचाई, उतना खतरा-** स्टडी में यह भी पाया गया कि हर 10 सेंटीमीटर ऊंचाई बढ़ने पर कैंसर का खतरा लगभग 16 प्रतिशत बढ़ जाता है। वैज्ञानिकों ने पाया कि ऊंचाई और कैंसर के बीच यह संबंध सभी आय वर्गों और जातियों के लोगों में पाया गया।

● **यह हर्मोन है जिम्मेदार-** इसका एक और कारण इंसुलिन जैसा वृद्धि कारक 1 (आईजीएफ-1) नामक हार्मोन हो सकता है, जो कैंसर का कारण बन सकता है।

पेरिस पैरालिंपिक-2024

नितेश कुमार ने बैडमिंटन में गोल्ड जीता

● भारत को अब तक 9 मेडल, योगेश कथुनिया ने डिस्कस थ्रो में सिल्वर दिलाया

पेरिस (एजेंसी)। पेरिस पैरालिंपिक में भारत ने दूसरा गोल्ड मेडल जीत लिया है। बैडमिंटन मेंस सिंगल्स की स्स्8 कैटेगरी में नितेश कुमार ने फाइनल जीता। उन्होंने ग्रेट ब्रिटेन के डैनियल बेथेल को 21-14, 18-21, 23-21 से हराया। उनसे पहले डिस्कस थ्रो में योगेश कथुनिया ने सिल्वर मेडल जीता था। पैरालिंपिक में भारत अब तक 2 गोल्ड, 3 सिल्वर और 4 ब्रॉन्ज जीत चुका है।

आंध्र-तेलंगाना में बाढ़ से 19 की जान गई

देश में बारिश और बाढ़ का तांडव

● वैष्णो देवी के रास्ते में लैंडस्लाइड, 2 महिलाओं की मौत, एक जख्मी ● म.प्र. और गुजरात समेत 6 राज्यों में बहुत भारी बारिश का अलर्ट

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश में बारिश का दौर जारी है। मध्य प्रदेश और गुजरात समेत 6 राज्यों में बहुत भारी बारिश का अलर्ट है। इस बीच जम्मू-कश्मीर के रियासी जिले में माता वैष्णो देवी मंदिर के नए मार्ग पर लैंडस्लाइड होने से 3 तीर्थयात्री गंभीर रूप से घायल हो गए। इनमें से 2 महिलाओं की मौत हो गई।उधर,आंध्र प्रदेश और तेलंगाना भारी बारिश के चलते बाढ़ जैसे हालात बन गए हैं। बाढ़ और बारिश के चलते 2 दिनों में आंध्र में 9 और तेलंगाना में 10 लोगों की मौत हुई है। दोनों राज्यों में 140 ट्रेनें कैंसिल हुई हैं। उफनती नदियों के कारण निचले इलाकों में पानी भर गया है। आंध्र प्रदेश में 1998 के बाद ऐसी बाढ़ आई है। 17 हजार लोगों का रेस्क्यू किया गया है। खम्मम के 110 गांव पूरी तरह से पानी में डूबे हैं। हैदराबाद में आज स्कूलों की छुट्टी कर दी गई है।

पीएम ने आंध्र व तेलंगाना के मुख्यमंत्रियों से बात की

प्रधानमंत्री मोदी ने आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू और तेलंगाना के सीएम रेवंत रेड्डी से फोन पर बात कर राज्य के हालात की जानकारी ली। पीएम ने दोनों को केंद्र की ओर से हर संभव मदद करने का आश्वासन दिया है।

आंध्र सीएम बोले

● **बारिश ने राज्य को हिलाकर रख दिया है-** सीएम एन चंद्रबाबू नायडू ने कहा कि भारी बारिश ने राज्य को हिलाकर रख दिया है। विजयवाड़ा और गुंटूर शहर पूरी तरह से जलमग्न हो गए हैं।

● **राजस्थान में बारिश ने 13 साल का रिकॉर्ड तोड़ा-** राजस्थान में मानसून ने अगस्त में नया रिकॉर्ड बना दिया है। अगस्त में 344एमए बरसात हुई, जो साल 2011 से 2023 तक सबसे ज्यादा है। इस साल इतनी बारिश अब तक किसी भी महीने में नहीं हुई।

● **15 राज्यों में भारी और 6 राज्यों में बहुत भारी बारिश का अलर्ट-** मौसम विभाग ने उत्तर प्रदेश-महाराष्ट्र सहित 15 राज्यों में भारी बारिश का अलर्ट जारी किया है। मध्य प्रदेश और गुजरात समेत 6 राज्यों में बहुत भारी बारिश का अलर्ट है।

● **म.प्र. आज 5 जिलों में 8 इंच तक बारिश का अलर्ट** - मध्य प्रदेश में बारिश कराने वाला स्ट्रॉन्ग सिस्टम फिर एक्टिव हो गया है। सोमवार को भोपाल,बैतूल, हरदा, बुरहानपुर, खरगोन और देवास में बारिश जारी थी। आज अति भारी बारिश का अलर्ट है। यहां 24 घंटे में 8 इंच तक पानी गिर सकता है।

जाति जनगणना पर आ गया सुप्रीम कोर्ट का फैसला

कहा- यह नीतिगत मामला; अब गेंद केंद्र सरकार के पाले में

उच्चतम न्यायालय ने कहा- हम हस्तक्षेप नहीं कर सकते

नई दिल्ली (एजेंसी)। जातिगत गणना मामले में हस्तक्षेप करने से सुप्रीम कोर्ट ने इंकार कर दिया है। शीर्ष अदालत ने कहा कि यह मामला सरकार के दायरे में आता है और नीतिगत मामला है। सुप्रीम कोर्ट ने सामाजिक-आर्थिक जाति जनगणना कराने की मांग करने वाली याचिका पर विचार करने से मना कर दिया। इसके बाद याचिकाकर्ता ने याचिका वापस लेने की अनुमति मांगी। पी. प्रसाद नायडू ने वरिष्ठ अधिवक्ता रविशंकर जंडियाला और अधिवक्ता श्रवण कुमार करनम के माध्यम से उच्चतम न्यायालय में याचिका दाखिल कर जाति जनगणना कराने के लिए केंद्र को निर्देश देने की मांग की थी।

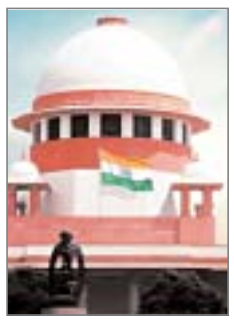

कोर्ट ने कहा-

इस बारे में क्या किया जा सकता?

अदालत ने याचिकाकर्ता के अधिवक्ताओं से कहा, इस बारे में क्या किया जा सकता है? यह मुद्दा शासन के दायरे में आता है। यह नीतिगत मामला है। अधिवक्ता रविशंकर जंडियाला ने तर्क दिया कि कई देशों ने ऐसा किया है, लेकिन भारत ने अभी तक ऐसा नहीं किया है। उन्होंने कहा, 1992 के इंद्रा साहनी फैसले में कहा गया है कि यह जनगणना समय-समय पर की जानी चाहिए।

बेटी को प्रेमी के साथ देख आग बबूला हुआ पिता

● मासूम का सिर धड़ से किया अलग, शव के कर डाले 6 टुकड़े

बहराइच (एजेंसी)। किसी बेटी का बाप होना वाकई एक सुखद अनुभूति होती है। बच्ची की किलकारियों से बाप को मिलने वाली दिली सुकून को शब्दों में कहना मुश्किल होता है। जैसे-जैसे बेटी की आयु बढ़ती है पिता का यही सुकून उसकी परवरिश, पढ़ाई, शादी और सुरक्षा जैसी चिंताओं से घिर जाते हैं। अपनी झूठी शान के लिए अपनी ही बेटी को अपने हाथों से मौत के घाट उतार देते हैं। ऐसा ही एक मामला थाना मोतीपुर के लक्ष्मनपुर मटेही, (निबिया) से सामने आया।

● बुलडोजर एक्शन पर सुप्रीम कोर्ट गाइडलाइन जारी करेगा,सुझाव मांगे, कहा-

सिर्फ आरोपी होने पर किसी का घर नहीं गिरा सकते, दोषी हो तब भी नहीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट में सोमवार को देशभर में आरोपियों के खिलाफ बुलडोजर कार्रवाई पर सुनवाई हुई। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि अगर कोई सिर्फ आरोपी है तो प्रॉपर्टी गिराने की कार्रवाई कैसे की जा सकती है? जस्टिस विश्वनाथन और जस्टिस बीआर गवई की बेंच ने कहा, 'अगर कोई दोषी भी हो, तब भी ऐसी कार्रवाई नहीं की जा सकती है।' सुप्रीम कोर्ट जमीयत-उलेमा-ए-हिंद की याचिका पर सुनवाई कर रही है। इसमें आरोप लगाया गया है कि भाजपा शासित राज्यों में मुसलमानों को निशाना बनाया जा रहा है और बुलडोजर एक्शन लिया जा रहा है। अब इस केस की सुनवाई 17 सितंबर को होगी।

संक्षिप्त समाचार

मध्यप्रदेश उत्सव की सांस्कृतिक संध्या में मैहर वाद्य वृन्द की हुई आकर्षक प्रस्तुति

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्यप्रदेश भवन में आयोजित 'मध्यप्रदेश उत्सव' की सांस्कृतिक संध्या में आज श्री कमल किशोर माहौर के निर्देशन में 10 संगीतज्ञों के समूह द्वारा मैहर वाद्य वृन्द की प्रस्तुति दी गई। प्रस्तुति में शास्त्रीय रागों - राग किरवानी और राग सिंधुरा, आंचलिक लोकधुनों और गांधीजी के भजनों पर श्री कमल किशोर माहौर के नलतरंग वादन को श्री गौतम भारतीय और श्री नेमचंद पटेल ने हारमोनियम, श्री सौरभ चौरसिया और श्री कमाल खान ने तबला, श्री ब्रजेश द्विवेदी ने सरोद, श्री अहमद खान ने सारंगी, श्री अनिल जैसवाल और श्री पवन सिंह ने सितार और श्रीमती कल्पना मिश्रा ने पखावज पर संगत दी। कार्यक्रम में ब्रिटिश मार्च टू विक्ट्री और राजस्थान के घूमर की भी प्रस्तुति दी गई। उल्लेखनीय है कि मध्यप्रदेश शासन के संस्कृति संचालनालय से संरक्षण प्राप्त इस वाद्यवृन्द की स्थापना प्रसिद्ध संगीत मनीषी उस्ताद उलाउद्दीन खॉ साहब ने 1918 ने की थी। उस्ताद अलाउद्दीन खॉ ने परम्परागत वाद्ययंत्रों के अलावा दुर्लभ वाद्य यंत्रों का भी समावेश इस वाद्यवृन्द में किया था, जिसमें नलतरंग प्रमुख है। नलतरंग बंदूक की नालों को काटकर एक नये शास्त्रीय वाद्य के रूप में निर्मित किया गया था। यह वाद्यवृन्द में विशेष आकर्षण का केंद्र है। भारतीय शास्त्रीय संगीत की परम्परा का निर्वहन करते हुए यह पहला ऐसा वाद्यवृन्द है, जिसने 100 से अधिक वर्ष पूर्ण किये हैं।

बच्चों के व्यक्तित्व विकास में मां का बड़ा योगदान होता है - श्रीमती कृष्णा गौर

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमती कृष्णा गौर कहा कि हमारा मीनल क्षेत्र एक प्रकार से तीर्थ क्षेत्र बनता जा रहा है, यहाँ धार्मिक आयोजन लगातार होते रहते हैं, वे गणेश पार्क न्यू मिनाल में ईको फ्रेन्डली श्री गणेष मूर्तियों के निर्माण के 12 वर्ष पूर्ण होने के कार्यक्रम को संबोधित कर रही थी। राज्य मंत्री श्रीमती गौर ने कहा कि मैं देख रही हूं कि बच्चों के गणेश प्रतिमा के निर्माण में उनकी माता का बड़ा योगदान है और हम हमेशा से कहते हैं कि बच्चों के चरित्र विकास में बच्चों के व्यक्तित्व विकास में उनकी माता का बड़ा योगदान होता है। मंत्री श्रीमती कृष्णा गौर ने कहा कि हमारे धर्म संस्कृति में मनाए जाने वाले यह पर्व हमारे मन को उल्लास से भरते हैं, हमारे जीवन में नए रंग भरते हैं। भगवान गणेश का 10 दिवसीय उत्सव जब आरंभ होने जा रहा है तो हमारे बच्चों ने मिट्टी के गणेश जी की प्रतिमा बनाई है और बच्चों के साथ बड़े भी बहुत ही उत्साह से उनकी मदद कर रहे हैं। हिंदू धार्मिक संगठन द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में पूर्व पार्षद संजय वर्मा , वार्ड 65 की पार्षद श्रीमती शिरोमणि शर्मा, पार्षद श्रीमती उर्मिला मौर्य, वरिष्ठ नेता सुरेंद्र वाटिका, विक्रम सिंह बघेल, मंडल अध्यक्ष निलेश गोर, वार्ड 72 के पार्षद विकास पटेल और विधायक प्रतिनिधि भानपुर मंडल विनोद साहू, वरिष्ठ कार्यकर्ता बहन राधा राठौर आदि मौजूद रहे।

संभागायुक्त श्री सिंह की अध्यक्षता में राजस्व एवं विकास कार्यो की समीक्षा बैठक 11 सितंबर को

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। आयुक्त भोपाल संभाग श्री संजीव सिंह की अध्यक्षता में बुधवार,11 सितंबर को प्रातः 10.30 बजे से आयुक्त कार्यालय के सभाकक्ष में राजस्व एवं विकास कार्यों की समीक्षा बैठक आयोजित की जाएगी। बैठक में भोपाल संभाग के सभी जिलों के कलेक्टर्स, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत, आयुक्त नगर निगम, सभी संभागीय अधिकारी एवं अपर कलेक्टर्स को उपस्थित रहने के निर्देश दिए गए है।

सोमवार से 15 दिवसीय कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ केन्द्रीय जेल भोपाल में किया गया

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। न्यायाधिपति, मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय एवं अध्यक्ष उच्च न्यायालय विधिक सेवा समिति जबलपुर श्री विवेक अग्रवाल के निर्देशानुसार एवं प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश श्री अमिताभ मिश्र के मार्गदर्शन एवं मुख्य आतिथ्य एवं सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण भोपाल श्रीमती आरती शर्मा की उपस्थिति में सोमवार से 15 दिवसीय कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ केन्द्रीय जेल भोपाल में किया गया। कार्यकम में प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश श्री अमिताभ मिश्र द्वारा व्यक्त किया गया कि कारागार में निरूद्ध रहने के दौरान बंदियों को समाज की मुख्यधारा में सम्मिलित होने के लिए खुद को तैयार करना है, बंदियों को समाज में अपनी उपयोगिता सिद्ध करने के उद्देश्य से प्रशिक्षण दिया जाकर सक्षम बनाना आवश्यक है। इसी क्रम में जेल निरूद्ध बंदियों को विभिन्न ट्रेड जैसे रंगाई, बुनाई एवं पेंटिंग, प्रिंटिंग अन्य में प्रशिक्षित किया जाना है ताकि वह जेल से रिहा होने के उपरांत स्वरोजगार एवं उन्हें समाज की मुख्य धारा लाया जा सके। इसी तारतम्य में आज से 15 दिवसीय कौशल प्रशिक्षण केन्द्रीय जेल, भोपाल में बंदियों को आईटीआई गोविंद पुरा भोपाल के द्वारा प्रिंटिंग व्यवसाय से संबंधी कौशल प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है।

ईको जंगल कैंप कठोतिया को सिल्वर अवार्ड

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। प्रकृति पर्यटन के क्षेत्र में मध्यप्रदेश को एक और उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल हुई है। ईको जंगल कैंप कठोतिया को आईसीआरटी इंडिया और सबकॉन्टिनेंट अवार्ड के नेचर पॉजिटिव श्रेणी में सिल्वर अवार्ड मिला है।

नई दिल्ली में एक कार्यक्रम में यह पुरस्कार म.प्र. ईको पर्यटन विकास बोर्ड दिया गया। यह अवार्ड प्रतिवर्ष आईसीआरटी इंडिया के द्वारा भारत में नेचर एवं रिस्पांसिबल टूरिज्म में उत्कृष्ट कार्य करने वाली संस्थाओं एवं व्यक्तियों को दिया जाता है। पुरस्कार वितरण कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री सतपाल जी महाराज, पर्यटन मंत्री उत्तराखंड श्रीमती मुग्धा सिन्हा, डायरेक्टर जनरल (पर्यटन) भारत सरकार एवं आईसीआरटी फाउंडेशन के डायरेक्टर डॉ. हेरोल्ड गुडविन थे। मध्यप्रदेश ईको पर्यटन विकास बोर्ड की ओर से कार्यक्रम में श्री सन्देश माहेश्वरी, सहायक महाप्रबंधक श्री सिद्धार्थ सिंह, परिक्षेत्र अधिकारी वीरपुर एवं ईकोपर्यटन समिति कठोतिया के सदस्य श्री मदनलाल, श्री कन्हैया लाल एवं श्री हरि सिंह उपस्थित रहे। मध्यप्रदेश ईको पर्यटन विकास बोर्ड द्वारा ईको जंगल कैंप कठोतिया में स्थानीय समुदाय के माध्यम से विभिन्न ईको पर्यटन गतिविधियां जैसे कैम्पिंग, पक्षी दर्शन, गाँव का भ्रमण, घने वन क्षेत्रों में प्राचीन चट्टानों आश्रयों, झरनों, पवित्र स्थलों तक ट्रेकिंग और साहसिक गतिविधियाँ जैसे रैपलिंग, नदी पार करना, संरक्षण शिक्षण गतिविधियाँ और अनेकों प्रशिक्षण कार्यक्रम आदि संचालित किये जाते हैं। आईसीआरटी इंडिया द्वारा समुदाय आधारित ईको पर्यटन मॉडल को भील जैसे आदिवासी स्थानीय समुदायों के लिए आजीविका सुरक्षित करने, वन विभाग और वनवासियों के बीच सकारात्मक संबंध बनाने और प्रकृति को संरक्षित करने का एक अत्यधिक अनुकरणीय तरीका माना है। इस पुरस्कार से मध्यप्रदेश ईको पर्यटन विकास बोर्ड द्वारा कार्यान्वित की जा रही समुदाय आधारित ईकोपर्यटन को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान प्राप्त होगी।

प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना छोटे कारीगरों को हुनरमंद बनाने की कारगर पहल है

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। प्रबल मान्यता है कि इस संसार को भगवान विश्वकर्मा ने यह सुन्दर स्वरूप दिया है। वे इस सृष्टि के पहले वास्तुकार एवं शिल्पज्ञ थे। केन्द्र सरकार ने %प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना% के नाम से एक अभिनव योजना प्रारंभ की है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 17 सितम्बर 2023 को योजना का शुभारंभ किया था। योजना में अपने हाथों और औजारों से काम करने वाले पारम्परिक कारीगरों एवं शिल्पकारों को सभी प्रकार की सहायता दी जायेगी। योजना में 18 प्रकार के परम्परागत व्यवसायों जैसे बढ़ई, नाव-निर्माता, कवच निर्माता, लोहार, हथौड़ा और टूल-किट निर्माता, ताला बनाने वाले, सुनार, कुम्हार, मूर्तिकार (मूर्तिकार व पत्थर तराशने वाले), पत्थर तोड़ने वाले, मोची (चर्मकार)/जूते बनाने वाले, राज-मिस्त्री, टोकरी/चटाई/झाड़ू निर्माता/कॉयर बुनकर, गुड़िया और खिलौने निर्माता (पारम्परिक), नाई, माला निर्माता, धोबी, दर्जी और मछली पकड़ने के जाल बनाने वाले कारीगरों को शामिल किया गया है। इच्छुक आवेदकों को योजना में पंजीयन कराने के लिये %पीएम विश्वकर्मा पोर्टल% भी बनाया गया है। इस पोर्टल में मध्यप्रदेश की सभी ग्राम पंचायतों एवं नगरीय निकायों में एक सितम्बर 2024 तक कुल 29 लाख 40 हजार 426 से अधिक कारीगरों ने अपने पंजीयन करा लिया है। कुटीर एवं ग्रामोद्योग विभाग द्वारा इन पंजीयन आवेदनों में से पात्र कारीगरों एवं शिल्पकारों को प्रशिक्षण देकर दक्ष बनाया जायेगा और उनके उत्पादों को बेचने के लिये सेल प्लेटफार्म भी मुहैया कराया जायेगा। आयुक्त, हाथकरघा एवं हस्तशिल्प ने बताया कि मूलतः केन्द्र सरकार के सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय की पीएम विश्वकर्मा योजना में कुटीर एवं ग्रामोद्योग विभाग ट्रेनिंग पार्टनर के रूप में काम करेगा। योजना के घटकों में पीएम विश्वकर्मा प्रमाण-पत्र एवं आईडी कार्ड के जरिये कारीगरों और शिल्पकारों का पात्रता पंजीयन किया जाएगा। इन पात्र कारीगरों को 5 से 7 दिनों का बुनियादी प्रशिक्षण और 15 दिन या इससे अधिक दिन का उन्नत प्रशिक्षण भी दिया जाएगा।

गोविंदपुरा में विकास कार्यों का किया भूमि-पूजन

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमती कृष्णा गौर ने रविवार को गोविंदपुरा विधानसभा के वार्ड- 72 और 73 में विभिन्न विकास कार्यों का भूमिपूजन किया। राज्यमंत्री श्रीमती गौर ने कहा कि गोविंदपुरा विधानसभा को विकास के शिखर पर पहुंचाना है। राज्य सरकार विकास के उद्देश्य को लेकर चल रही है। इसी क्रम में हमने विधानसभा में हर क्षेत्र में विकास किया है। गोविंदपुरा क्षेत्र में विकास कार्य लगातार किए जा रहे हैं। इसके साथ ही आम जनता को जनहितैषी व जन कल्याणकारी सरकारी योजनाओं का लाभ भी मिल रहा है। उन्होंने स्थानीय नागरिकों से चर्चा कर उनकी समस्याएं सुनी और उन्हें अतिशीघ्र हल करने का आश्वासन दिया। राजयमंत्री श्रीमती गौर ने वार्ड-72 मालीखेड़ा में हायर सेकेंड्री स्कूल चौराहे से विसर्जन घाट तक 25 लाख 81 हजार रुपए की लागत से तैयार होने वाली सी.सी रोड के निर्माण के कार्य का भूमिपूजन किया। वार्ड-72 में कल्याण नगर में गली नंबर 3-4 में 20 लाख 60 हजार रुपए की लागत से तैयार होने वाली सी.सी रोड एवं नाली के निर्माण कार्य का भी भूमिपूजन किया। पार्षद श्री राजीव राठौर, विकास पटेल और भानपुर मण्डल अध्यक्ष नीलेश गौर मौजूद थे।

रक्तदान करने से हमें आत्म संतुष्टि मिलती है-ऊर्जा मंत्री तोमर

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने रक्तदान के महत्व को प्रतिपादित करते हुए कहा कि हमारे दान किए गए रक्त से कई लोगों की जिंदगी बचती है। रक्तदान का कितना महत्व है, इसका अहसास हमें तब होता है, जब हमारा कोई निकटतम व्यक्ति जिंदगी और मौत के बीच जूझ रहा होता है।

रक्तदान कर हम जहां एक ओर किसी की जान बचाते हैं, वहीं दूसरी ओर इससे जबर्दस्त आत्म संतुष्टि मिलती है। श्री तोमर जन कल्याण संघर्ष समिति के तत्वावधान में रविवार को ग्वालियर में मिलन गार्डन रमटापुरा में आयोजित रक्तदान शिविर को संबोधित कर रहे थे। शिविर में जनकल्याण समिति के 72 दानवीरों ने रक्तदान कर समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन किया। ऊर्जा मंत्री श्री तोमर ने कहा कि कई लोग रक्तदान को लेकर फैली भ्रांतियों के कारण रक्तदान करने से कतराते हैं, जबकि इससे कोई हानि नहीं होती बल्कि रक्तदान से हमारा शरीर स्वस्थ और चुस्त-दुरुस्त रहता है। अतः हम सभी को रक्तदान के लिए आगे आना चाहिए। ऊर्जा मंत्री श्री तोमर ने कहा कि जन कल्याण संघर्ष समिति द्वारा रक्तदान शिविर लगाकर प्रेरणादायी कार्य किया गया है। पीड़ितों की सेवा से बढ़कर कोई दूसरा कार्य नहीं हो सकता। ऊर्जा मंत्री श्री तोमर ने कहा कि रक्तदान इसलिए भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसका किसी फैक्ट्री में निर्माण नहीं हो सकता। आकस्मिक रूप हुई दुर्घटना में घायल और गंभीर रूप से पीड़ितों का जीवन बचाने के लिए दान किया गया रक्त ही काम आता है। अतः हमें रक्तदान के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए। उन्होंने ऐलान किया कि आगामी 8 सितम्बर को जन कल्याण संघर्ष समिति द्वारा रक्तदान करने वाले सभी युवा दानवीरों का प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मान किया जाएगा।

सब्सिडी का लाभ ले रहे बड़े आवासीय परिसरों की बिजली कंपनी करेगी जॉच

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी द्वारा राज्य शासन के परिपत्र और मध्यप्रदेश विद्युत प्रदाय संहिता की धारा 4.18 के प्रावधानों के विपरीत सब्सिडी ले रहे तथा एक ही परिसर में अनेक विद्यमान कनेक्शनधारी उपभोक्ताओं पर कार्यवाही की मुहिम तेज कर दी गई है। कंपनी द्वारा अपनी बिलिंग प्रणाली का डाटा विश्लेषण कर पूरे कंपनी कार्यक्षेत्र में नगर निगम एवं नगर पालिका परिषद एवं रजिस्ट्रार पंजीयन एवं मुद्रांक के सहयोग से उपभोक्ता परिसरों के भूभाग के क्षेत्रफल एवं प्रॉपर्टी की गाइडलाइन क़ीमत के आधार पर आंकलन किया जा रहा है। संदिग्ध उपभोक्ता परिसरों की जांच की जा रही है। कंपनी द्वारा म.प्र शासन के सूचना प्रौद्योगिकी विभाग के साथ समन्वय कर शासन के विभिन्न विभागों की भौगोलिक सूचना प्रणाली पर अपने उपभोक्ताओं की जानकारी साझा कर उसका आंकलन किया जा रहा है। सामान्यतः बड़े भूभाग क्षेत्रफल एवं अधिक क़ीमत की गाइडलाइन वाले उपभोक्ता द्वारा सब्सिडी लिया जाना व्यावहारिक नहीं होने के कारण कंपनी द्वारा ऐसे परिसरों को चिन्हित किया जाकर कार्यवाही की जा रही है। अपर मुख्य सचिव ऊर्जा श्री मनु श्रीवास्तव द्वारा सोमवार को भोपाल शहर में अरेरा कॉलोनी के ई-1, ई-3 और ई-4 क्षेत्र में सब्सिडी का लाभ ले रहे घरेलू विद्युत उपभोक्ताओं के परिसरों का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान राज्य शासन के परिपत्र और मध्यप्रदेश विद्युत प्रदाय संहिता के प्रावधानों के विपरीत बड़े आवासीय परिसरों में एक से अधिक कनेक्शन पाए जाने तथा सब्सिडी ले रहे कनेक्शनों पर उन्होंने अप्रसन्नता व्यक्त करते हुए संबंधित क्षेत्र के मीटर रीडरों द्वारा ऐसे कनेक्शनों को चिन्हित करने के निर्देश दिये।

योजनाओं के माध्यम से हो रहे प्रयासों को परिणाम में बदलें - प्रभारी मंत्री रावत

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। वन, पर्यावरण एवं मंडला जिले के प्रभारी मंत्री श्री रामनिवास रावत ने कहा कि सरकार द्वारा सभी वर्ग के कल्याण को ध्यान में रखते हुए योजनाएं संचालित की जा रही हैं। सभी अधिकारी पूरी क्षमता से कार्य करते हुए प्रत्येक पात्र व्यक्ति को योजनाओं से लाभान्वित करें। उन्होंने कहा कि योजनाओं के माध्यम से हो रहे प्रयासों को परिणामों में बदलने की आवश्यकता है। मंत्री रावत ने निर्देश दिये कि मातृ एवं शिशु मृत्यु दर को कम करने तथा कुपोषण को जड़ से समाप्त करने के लिए जागरूकता अभियान संचालित किये जाये। प्रभारी मंत्री ने मंडला में जिला योजना मंडल की बैठक के दौरान यह बात कही। प्रभारी मंत्री श्री रामनिवास रावत ने कहा कि कुपोषित बच्चों को रोस्टर बनाकर एनआरसी में दर्ज कराएं। बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं तथा जन-जागरूकता के माध्यम से जिले को कुपोषण मुक्त बनाया जाये। उन्होंने कहा कि जिले के प्रत्येक ग्राम को सड़क से जोड़ने का प्रयास करें। राजस्व महाभियान के दौरान नामांतरण, सीमांकन एवं बटवारा के निरस्त किए गए प्रत्येक प्रकरणों की पुनः जांच करें। विकास कार्यों में जन-प्रतिनिधियों का सहयोग प्राप्त करें। विभागीय समन्वय को बेहतर बनाएं। निर्माण कार्यों को बेहतर गुणवत्ता के साथ समय पर पूर्ण करें। प्रभारी मंत्री श्री रावत ने कहा कि जिले में होने वाली वन उपजों के लिए संग्रहण और प्रोसेसिंग के कार्य को आगे बढ़ाएं तथा इन वन उपजों के लिए बेहतर मार्केट दिलाने में सहयोगी बनें। वनधन केन्द्रों के माध्यम से अधिक से अधिक लोगों को रोजगार उपलब्ध कराएं। उन्होंने कहा कि मंडला जिले में ईको टूरिज्म को प्रोत्साहित करते हुए पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए विस्तृत कार्य योजना तैयार करें। मंत्री श्री रावत ने प्रभारी मंत्री श्री रामनिवास रावत ने एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत फॉरेस्ट रेस्ट हाउस मंडला में पौध-रोपण किया। उन्होंने कहा कि पोध-रोपण अभियान के तहत रोपे गए प्रत्येक पौधों की सुरक्षा के लिए पुख्ता इंतजाम करें।

जिस माह की है राशन सामग्री, अब उसी माह में मिलेगी-खाद्य मंत्री

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। भारत सरकार द्वारा प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना में वितरित की जाने वाली खाद्यान्न सामग्री के संबंध में जारी नये निर्देशों के अनुसार अब पात्र परिवारों को राशन सामग्री का वितरण प्रत्येक माह की 1 से 31 तारीख तक करने की समय-सीमा निर्धारित की गई है। खाद्य, नागरिक एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री श्री गोविंद सिंह राजपूत ने बताया है कि अब जिस माह की राशन सामग्री है, उसी माह में मिलेगी। यह केरी फॉरवर्ड नहीं होगी।

अगस्त माह से इसे शुरू कर दिया गया है। अगस्त माह में एक करोड़ 17 लाख 53 हजार पात्र परिवारों को राशन सामग्री का वितरण किया गया। जुलाई के राशन सामग्री आवंटन में लगभग 7 लाख 96 हजार परिवारों को 1 से 15 अगस्त तक केरीफॉवर्ड राशन का वितरण भी किया गया था। साथ ही इन परिवारों को अगस्त माह का राशन भी वितरित किया गया। मंत्री श्री राजपूत ने बताया है कि माह अगस्त मे %वन नेशन-वन राशन कार्ड% के तहत मध्य प्रदेश में अन्य राज्यों के 3644 परिवार द्वारा और अन्य राज्यों में प्रदेश के 34 हजार 667 परिवारों द्वारा एवं अन्तर्जिला पोर्टेबिलिटी से 14 लाख 38 हजार 630 परिवारों द्वारा राशन प्राप्त किया गया। यह माह जुलाई की तुलना में अधिक है। समय-सीमा में पात्र परिवारों को राशन वितरण के लिये राज्य स्तर पर प्रमुख सचिव खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण श्रीमती रश्मि अरूण शमी की अध्यक्षता में संबंधित विभागों के अधिकारियों की बैठक कर राशन प्रदाय एवं वितरण की सुनियोजित कार्य-योजना तैयार कर राशन सामग्री का वितरण कराया गया।

माह अगस्त 2024 के आवंटन अनुसार जिन जिलों में राशन सामग्री की उपलब्धता कम थी, उन जिलों में लगभग 25 हजार 600 एमटी गेहूं एवं चावल का अन्य जिलों से परिवहन कर प्रदाय केन्द्रों पर भण्डारण कराया गया। वृद्ध उपभोक्ताओं को उनके घर जाकर राशन सामग्री वितरित कराई गई।

समय सीमा बैठक सम्पन्न

सीएम हेल्पलाइन में दर्ज शिकायतों का समय-सीमा में निराकरण सुनिश्चित करायें : अपर कलेक्टर

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। सीएम हेल्पलाइन में दर्ज शिकायतों के निराकरण की समीक्षा करते हुए अपर कलेक्टर राजेश शाही ने शिकायतों को प्राथमिकता पर संतुष्टि के साथ निराकृत करने के निर्देश दिए हैं। अपर कलेक्टर ने कहा कि सीएम हेल्पलाइन में दर्ज शिकायतों की नियमित समीक्षा करें। शिकायतकर्ता से संपर्क कर शिकायत की वास्तविक स्थिति के आधार पर गुणवत्तापूर्ण निराकरण सुनिश्चित करायें। कोई भी शिकायत अन-अटेंडेड नहीं रहनी चाहिए तथा निम्न गुणवत्ता से बंद शिकायतों की संख्या न्यून होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि विभाग प्रमुख शिकायतों की स्वयं निगरानी रखें तथा शिकायतों की संख्या के आधार पर आवश्यक प्रत्रि यात्मक सुधार करें जिससे शिकायतों की संख्या में कमी आए।

लोक सेवा गारंटी अधिनियम अंतर्गत प्राप्त आवेदनों की समीक्षा करते हुए अपर कलेक्टर ने आवेदनों को समय-सीमा में निराकृत करने के निर्देश दिए हैं। जाति प्रमाण पत्र से संबंधित समस्त आवेदनों को प्राथमिकता पर निराकृत करने के निर्देश दिए गए हैं। उन्होंने समय-सीमा पत्रों पर निर्धारित समयावधि में समस्त कार्यवाहियां पूर्ण कर विलोपित कराने के निर्देश दिए हैं। मुख्यमंत्री कार्यालय तथा वरिष्ठ कार्यालयों से प्राप्त पत्रों पर त्वरित कार्यवाही कर वरिष्ठ कार्यालय को अवगत कराने के निर्देश दिए गए हैं। बैठक में उपखण्ड अधिकारी गोपद बनास नीलेश शर्मा, सिहावल एसपी मिश्रा, मझौली आरपी त्रिपाठी, चुरहट शैलेश द्विवेदी सहित सभी विभागों के जिला स्तरीय अधिकारी उपस्थित रहे।

एक ही पेड़ पर युवक-युवती की लटकी मिली लाश

हत्या या आत्महत्या के कारणों को जानने में जुटी पुलिस, घर से घूमने कहकर निकला था युवक

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। सीधी जिले के आदिवासी अंचल कुसमी थाना क्षेत्र अंतर्गत ग्राम रौहाल मे एक पेड़ पर युवक और युवती की लटकी हुई लाश आज देखी गई। इसके बाद जानकारी लगते ही पुलिस मौके पर पहुंच गई है और मामले को गंभीरता से लेते हुए हत्या या आत्महत्या के कारणों की जांच कर रही है।

एक ही पेड़ में फंदे में लटके हुए मिले युवक-युवती: मिली जानकारी के अनुसार एक युवक और एक युवती एक ही पेड़ में एक ही रस्सी के फंदे में लटके हुए मिले। जिसकी वजह से पूरे गांव में सन्नाटा छा गया है। गांव वालों ने इसकी सूचना कुसमी पुलिस को दी। वहीं मिली जानकारी के अनुसार घटनास्थल पर पुलिस पहुंच गई है और पूरे मामले को लेकर जांच कर रही है।

घर से घूमने कहकर निकला था युवक: घटना के बारे थाना प्रभारी भूपेश बैस ने जानकारी देते हुए बताया है कि मृतक युवक का नाम रमदमन सिंह है जो की ग्राम राहौल का रहने वाला है। इसके अलावा युवती नाबालिग है जो अपने नानी के यहां उसी गांव मे आई हुई थी। युवक भी मुंबई में रहकर काम किया करता था जो 3 दिन पहले अपने यहां आया था और कल रविवार दोपहर 1 बजे से घर से घूमने के लिए निकला हुआ था।

जहां आज सोमवार के दिन दोनों की एक ही फांसी के फंदे से पलाश के पेड़ में लटकी हुई लाश मिली। वहीं शव को पोस्टमार्टम करने के लिए भिजवा दिया है और पूरे मामले की जांच की जा रही हैं।

विश्वविद्यालय की बिल्डिंग में दूसरी मंजिल के गिरा मजदूर, मौत

काम करते समय पैर फिसलने से हुआ हादसा

मीडिया ऑडीटर, छतरपुर निप्र। छतरपुर के सिविल लाइन थाना अंतर्गत एक कारीगर की सोमवार रात निर्माणाधीन महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्वविद्यालय की छत से गिरने से मौत हो गई। वह रात में पुट्टी का काम कर रहा था। तभी उसका पैर फिसला और दो मंजिला बिल्डिंग से नीचे गिरकर घटना स्थल पर ही मौत हो गई।

घटना की जानकारी सिविल लाइन थाना पुलिस को दी गई। मंगलवार दोपहर पोस्टमॉर्टम के बाद बॉडी परिजनों को सौंप दी गई। मामले की जांच पड़ताल में थाना पुलिस जुट गई है।

जानकारी के अनुसार, बबलू पिता कुमकुम नागवंशी उम्र 35 बर्ष निवासी शाहपुर जिला सागर का रहने वाला है। जो गौरैया रोड में निर्माणाधीन महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्वविद्यालय की छत में पुट्टी का काम कर रहा था। तभी सोमवार रात 2 बजे उसका पैर फिसला और वह दो मंजिला बिल्डिंग से जमीन पर जा गिरा। जिससे उसकी घटना स्थल पर ही मौत हो गई। मौजूद लोगों ने घटना की जानकारी सुबह 6 बजे सिविल लाइन थाना पुलिस को दी गई। थाना पुलिस मौके पर पहुंचकर पंचनामा तैयार करते हुए बॉडी को जिला अस्पताल पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया।

बलराम नागवंशी ने बताया कि हमारे चाचा गुरैया रोड पर विश्वविद्यालय की बिल्डिंग में काम करने के लिए कुछ दिन पहले घर से आए थे। कुल सचिव यशवंत पटेल ने बताया कि इस संबंध में मुझे कोई जानकारी नहीं है।

मैं संबंधित ठेकेदार से बात करता हूं। सिविल लाइन थाना प्रभारी वाल्मीकि चौबे ने बताया कि एक व्यक्ति की बिल्डिंग में काम करते समय मौत हुई है। पुलिस के द्वारा मामले की जांच पड़ताल की जा रही है।

बीजेपी महामंत्री के खिलाफ थाने में दिया आवेदन

3 महिलाओं ने लगाया अभद्रता करने का आरोप, कोर्ट के आदेश पर घर खाली कराने गया था

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। सीधी में बीजेपी कार्यकर्ताओं के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई गई है। वार्ड की महिला ने कार्यकर्ताओं पर अभद्रता करने के आरोप लगाए हैं।

ये है पूरा मामला: मामला रविवार रात को वार्ड 3 निवासी रफीक मंसूरी का घर खाली कराने प्रशासन की टीम पहुंची थी। लेकिन परिवार वाले के विरोध करने से घर खाली नहीं हो सका। टीम वापस लौट गई। इसके बाद सोमवार दोपहर 12 बजे बीजेपी युवा मोर्चा महामंत्री शुभम जायसवाल अपने साथियों के साथ घर खाली कराने पहुंचे थे। इसी पर आपत्ति जताते हुए महिला का कहना है कि कार्यकर्ताओं ने ताला तोड़कर कर घर का सामान बाहर फेंक दिया। साथ ही अभद्रता भी की। घटना का वीडियो भी सामने आया है।

हैरानी की बात तो यह है कि शनिवार को प्रशासन की टीम मौके पर गई थी। जहां उन्हें घर खाली कराने का आदेश कोर्ट ने दिया था। लेकिन एसडीएम, तहसीलदार और थाना प्रभारी को बैरंग लौटना पड़ा था। इसके बाद बीजेपी कार्यकर्ता घर खाली कराने पहुंचे। एसडीएम नीलेश शर्मा ने बताया कि शुभम जायसवाल के पक्ष में सिविल कोर्ट ने आदेश दिया था। वार्ड में 3 निवासरत रफीक मंसूरी के घर खाली करना था। हम लोग गए तो वाद-विवाद की स्थिति उत्पन्न हो गई। इसके बाद हमने उसे दिन खाली करना उचित नहीं समझा। हम समझाइस देकर वापस आ गए। इसके बाद यह घटना हुई है। हम इस पूरे मामले की जांच कर रहे हैं।

बीजेपी नेता के खिलाफ दिया आवेदन: डीएसपी गायत्री तिवारी ने कहा कि जुबैदा खातून, जैतून खातून, रजिया खातून ने बीजेपी युवा मोर्चा महामंत्री शुभम जायसवाल उनके पिता संतोष जायसवाल सहित अन्य लोगों के खिलाफ आवेदन दिया है। जिसमें बताया गया कि उनके साथ अभद्रता की गई है। मामले की जांच की जा रही है। जब राज्य मंत्री राधा सिंह से इस बारे में बात की गई, तो तब कहा कि हम कलेक्टर और एसपी से इस मामले पर बात करते हैं। हालांकि अभद्रता किस वजह से हुई है। हम दोनों पक्षों को सुनने के बाद ही कुछ कह पाएंगे।

शराब पीकर कॉलेज पहुंचे प्रभारी प्राचार्य

अपर संचालक बोले- सिहावल महाविद्यालय के वीडियो की जांच कराई जा रही

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। सीधी जिले के सिहावल सरकारी कॉलेज में पदस्थ प्रभारी प्राचार्य एलबी सिंह का एक वीडियो वायरल हो रहा है। कहा जा रहा है कि वे शराब पीकर कॉलेज आए थे। वीडियो तीन दिन पुराना बताया जा रहा है। लेकिन यह वायरल सोमवार को हुआ है।

अपर संचालक शिक्षा विभाग आरपी सिंह ने बताया कि वीडियो हमारे पास भी पहुंचा है। वीडियो कब का है और क्या सच में शराब पीकर भी प्रभारी प्राचार्य कॉलेज आते हैं या नहीं। इसकी जांच की जा रही है। दोषी पाए जाने पर कार्रवाई की जाएगी।

रेत माफिया ने किसान को कुचला, आरोपी भाजपा नेता फरार

फसल बर्बाद करने से रोका तो चढ़ा दिया ट्रैक्टर, थाने के सामने धरना दिया

मीडिया ऑडीटर, सिंगरौली निप्र। सिंगरौली जिले में खुद की जमीन से अवैध रेत का परिवहन रोकने गए आदिवासी किसान की ट्रैक्टर से कुचलकर हत्या कर दी गई। आरोपी ड्राइवर ट्रैक्टर छोड़कर मौके से भाग निकला। घटना बरका चौकी क्षेत्र के गन्नई गांव में रविवार रात की है। ट्रैक्टर भाजपा नेता लाले वैश्य का है, जो घटना के बाद से ही फरार है। नेता की गिरफ्तारी और पुलिसकर्मियों पर कार्रवाई की मांग को लेकर ग्रामीण थाने के सामने धरना दे रहे हैं। यहां कांग्रेस के पूर्व मंत्री वंशमणि वर्मा समेत कई नेता और स्थानीय निवासी मौजूद हैं। पुलिस के मुताबिक, कुछ लोग गन्नई गांव से निकलने वाली पटीर नदी से रेत का अवैध खनन कर किसान इंद्रपाल अगरिया के खेत से जबरन ट्रैक्टर निकाल रहे थे। खेत में लगी धान की फसल को खराब होता देख इंद्रपाल ने आपत्ति जताई तो आरोपियों ने उसे ट्रैक्टर से कुचल दिया। उसकी मौके पर ही मौत हो गई।

हालांकि अब पुलिस कह रही है कि परिजन ट्रैक्टर से कुचलने से मौत नहीं बल्कि धक्का लगने से मौत होने की बात कह रहे हैं। मामले पर सोमवार को कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी और पूर्व मंत्री कमलेश्वर पटेल ने ट्वीट कर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव से कार्रवाई की मांग की है।

बड़ा भाई बोला- दबंगों ने कुचलकर मार दिया: इंद्रपाल के बड़े भाई सुरेश अगरिया ने कहा, 'गांव में ही रहने वाले लाले वैश्य और उनके साथी हमारे खेत और जमीन से लगातार रेत का अवैध परिवहन करते हैं। इससे फसल खराब होती है। कई बार उनसे ट्रैक्टर निकालने के लिए मना किया लेकिन वे नहीं माने। रविवार रात को भी आरोपी खेत से ट्रैक्टर निकाल रहे थे। करीब 8 बजे भाई इंद्रपाल वहां पहुंचा। ट्रैक्टर निकालने से मना किया तो उसे कुचलकर मार डाला। लाले वैश्य भाजपा युवा मोर्चा का पूर्व उपाध्यक्ष है।'

स्कूली वाहनों में क्षमता से अधिक बैठाए जा रहे बच्चे

यातायात विभाग नहीं कर रहा कार्रवाई, ड्राइवर के बगल की सीट में बैठाते हैं तीन से चार बच्चे

मीडिया ऑडीटर, अनूपपुर निप्र। अनूपपुर मुख्यालय में स्कूल नियमों का खुला उल्लंघन कर रहें है। बच्चों की जान को जोखिम में डालकर स्कूल के वाहन दौड़ रहे हैं। स्कूली वाहनों को रोकने के लिए कोई भी प्रशासनिक अधिकारी मौजूद नहीं हैं। निजी स्कूल संचालकों को किसी भी अधिकारी कर्मचारी का डर भी नहीं है।

अनूपपुर जिले में संचालित कई निजी स्कूल जो स्कूली बच्चों को वाहनों में ठूंस ठूंस कर बैठाते हैं। जान को जोखिम में डालकर ड्राइवर की बगल की सीट में तीन से चार बच्चों को बैठाते हैं। इसके साथ ही पीछे जहां 5 से 6 बच्चों के बैठने के जगह है, वहां पर 10 से 15 छोटे-छोटे बच्चें बैठे रहते हैं।

ओवरलोडिंग पर पालक भी नहीं दे रहे ध्यान: शहर में चल रहे स्कूली वाहनों में न सिर्फ क्षमता से अधिक बच्चे बैठाए जा रहे हैं। बल्कि उनमें आवश्यक सावधानियां भी नहीं बरती जा रही हैं। बावजूद इसके पालक भी इस ओर ध्यान नहीं दे रहे हैं। वे भी बच्चों की जान जोखिम में डालकर उन्हें लापरवाह वाहन चालकों के साथ स्कूल भेज रहे हैं। इससे कभी भी हादसा हो सकता है।

सिंगरौली की विन्ध्यनगर पुलिस की कार्रवाई

9 लाख की अवैध मादक पदार्थ हेरोइन तस्करी करते 2 आरोपी गिरफ्तार

मीडिया ऑडीटर, सिंगरौली निप्र। सिंगरौली जिले की विंध्यनगर पुलिस ने सोमवार को यूपी के सोनभद्र जिले से सिंगरौली में बिक्री करने आ रही अवैध मादक पदार्थ की बड़ी खेप पकड़ी है। पुलिस ने बाइक में सवार 2 आरोपियों से करीब 9 लाख की हीरोइन के साथ गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया है।

पुलिस अधीक्षक निवेदिता गुप्ता के निर्देश पर विशेष अभियान के तहत विंध्यनगर थाना प्रभारी अर्चना द्विवेदी ने 98 ग्राम अवैध मादक पदार्थ स्मैक (हेरोईन) कीमत 9 लाख रूपए के साथ एक पल्सर बाइक को जब्त कर 2 लोगों को हिरासत में लिया।

थाना प्रभारी ने बताया कि मुखबिर से मिली सूचना के बाद मौके पर पहुंच कर आरोपी दीपक कुमार भारती पिता गुलाब भारती (32) और विक्रांत पिता बृजेश भारती (20) को पकड़ा। पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से अवैध मादक पदार्थ जब्त कर एनडीपीएस एक्ट के तहत मामला दर्ज किया।

इस कार्रवाई में टीआई अर्चना द्विवेदी, सहायक उपनिरीक्षक रमेश प्रजापति, सुनील कुमार दुबे, प्रधान आरक्षक पंकज सिंह, बृजेश सिंह, हेमराज पटेल, कृष्णकुमार पाण्डेय, आरक्षक प्रताप कुमार पटेल, अमलेश सिंह, भोले लोधी का सराहनीय योगदान रहा।

आगामी त्यौहारों के दृष्टिगत शांति समिति की बैठक आयोजित

सिंगल यूज प्लास्टिक से बनी वस्तुओं का उपयोग नहीं कर ईकोफ्रेंडली वातावरण में त्यौहार मनाएं

शांतिपूर्ण एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण में मनाएं त्यौहार : अपर कलेक्टर

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। आगामी त्यौहारों के दृष्टिगत अपर कलेक्टर राजेश शाही की अध्यक्षता में शांति समिति की बैठक का आयोजन किया गया। अपर कलेक्टर द्वारा शांति समिति के सदस्यों के माध्यम से जिले वासियों से अपील की गई है कि आगामी त्यौहारों गणेश उत्सव, मिलाद-उन-नबी, दुर्गोत्सव, दीपावली को शांतिपूर्ण एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण में मनाएं। उन्होंने शांति समिति के सदस्यों से सजग रहकर भाईचारे के साथ त्यौहार मनाने तथा जिले में शांति व्यवस्था बनाए रखने में सहयोग की अपील की है। अपर कलेक्टर ने कहा कि गणेश उत्सव तथा दुर्गा उत्सव में मिट्टी से बनी मूर्तियों को स्थापित करें। धार्मिक आयोजनों में सिंगल यूज प्लास्टिक से बनी वस्तुओं का उपयोग नहीं करें तथा ईकोफ्रेंडली वातावरण में त्यौहार मनाएं। हम सभी के द्वारा किया गया एक छोटा सा प्रयास पर्यावरण संरक्षण तथा संवर्धन के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को मजबूत बनायेगा।

गणेश चतुर्थी एवं दुर्गोत्सव में पंडालों में वालेंटियर्स की सूची उपलब्ध करानी होगी: अपर कलेक्टर ने कहा कि त्यौहारों को मनाते समय इस बात का ध्यान रखें कि सभी सुरक्षात्मक उपाय कर लिए गए हैं। कानून एवं व्यवस्था की स्थिति निर्मित नहीं हो तथा यातायात का सुचारू रूप से संचालन जारी रहे। बैठक में यातायात के सुचारू संचालन के लिए निर्देशित किया गया है। उन्होंने कहा कि गणेश उत्सव तथा दुर्गोत्सव में मूर्ति स्थापना के पूर्व नियमानुसार अनुमति प्राप्त करनी होगी। प्रत्येक पंडाल के आयोजकों को वालेंटियर्स की सूची अनिवार्य रूप से उपलब्ध करानी होगी। सभी पंडालों में वालेन्टियर्स को रात्रि के समय देखरेख करना आवश्यक होगा। पंडालों में विद्युत की व्यवस्था सुचारू रूप से करनी होगी तथा सभी सुरक्षात्मक उपाय अपनाने होंगें। विद्युत सप्लाई में खुले तारों का प्रयोग नहीं करें। विद्युत विभाग के अधिकारियों को प्रत्येक पण्डाल की जांच कर सुरक्षात्मक उपाय सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए हैं। इसके साथ ही कार्यपालिक मजिस्ट्रेट एवं पुलिस अधिकारी प्रत्येक पंडाल का निरीक्षण कर आवश्यक सुरक्षात्मक व्यवस्थाओं को सुनिश्चित करेंगे। ध्वनि विस्तारक यंत्रों के उपयोग के सम्बंध में माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा जारी निर्देशों का पालन करना अनिवार्य होगा। अपर कलेक्टर ने कहा कि आयोजकों को फायर सेफ्टी एवं इलेक्ट्रिक सेफ्टी का ध्यान रखना आवश्यक होगा तथा सभी सुरक्षात्मक उपाय अपनाने होंगे। इसके साथ ही सभी आयोजन स्थलों में एक हेल्पडेस्क बनाने के लिए कहा गया है जिससे कार्यक्र म के संचालन में किसी भी प्रकार की असुविधा नहीं हो।

मूर्ति विसर्जन स्थल पर आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने के निर्देश: मूर्ति विसर्जन का कार्य केवल चिन्हित स्थानों में ही किया जाएगा। अपर कलेक्टर द्वारा विसर्जन कुण्ड के समीप सुरक्षा के दृष्टिकोण से किए जाने वाले प्रबंधों के संबंध में संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया गया है। उन्होंने विसर्जन स्थल के निर्धारित स्थल पर बेरिकेटिंग करने हेतु निर्देशित किया है। उन्होंने विसर्जन स्थल के समीप जेसीबी मशीन, गोताखोर, चिकित्सीय दल के साथ-साथ प्रकाश की व्यवस्था सुनिश्चित कराए जाने के निर्देश दिए हैं। इसके साथ ही छाया, पेयजल एवं पब्लिक एनाउंसमेंट सिस्टम की व्यवस्था सुनिश्चित करने के भी निर्देश दिए हैं। उन्होंने यातायात व्यवस्था में किसी भी प्रकार से अवरोध उत्पन्न ना हो, इसका विशेष ध्यान देते हुए मूर्तियों का विसर्जन स्थल तक पहुंचने के रूटचार्ट के संबंध में भी आवश्यक दिशा निर्देश दिए हैं।

अराजक तत्वों के विरूद्ध होगी वैधानिक कार्यवाही: अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अरविंद श्रीवास्तव ने कहा कि पुलिस द्वारा सतत रूप से चौकसी रखी जाएगी तथा कानून व्यवस्था की स्थिति निर्मित करने वाले असामाजिक तत्वों के विरूद्ध कठोर वैधानिक कार्यवाही की जाएगी। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक ने कहा कि कोई भी अप्रिय स्थिति उत्पन्न होने पर तत्काल प्रशासन एवं पुलिस को अवगत कराएं। तुरंत कड़े एवं प्रभावी कदम उठाए जाएगें।

स्वच्छता सर्वेक्षण में सिटिजन फीडबैक की भागीदारी सुनिश्चित करने अधिकारियों का उन्मुखीकरण किया गया

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। समय-सीमा बैठक में अपर कलेक्टर राजेश शाही के निर्देशन में स्वच्छता सर्वेक्षण में सिटिजन फीडबैक की भागीदारी सुनिश्चित करने अधिकारियों का उन्मुखीकरण किया गया। स्वच्छता सर्वेक्षण में कुल 9500 अंकों में नागरिकों की 60 प्रतिशत भागीदारी होती है जिसमें सभी निवासियों से सर्वेक्षण से जुड़े सवाल पूछे जाते हैं और उनसे स्वच्छता फीडबैक लिया जाता है।

सभी शासकीय भवनों में निर्धारित मापदंडों के अनुसार स्वच्छता बरकरार रखने के निर्देश दिए गए। स्वच्छ सर्वेक्षण में सभी शासकीय भवनों का मापदंड किया जाता है अतः सभी सरकारी भवन में स्वच्छता व्याप्त रहे तथा उत्सर्जित कचरा एक जगह एकत्रित रखें और एकत्रित कचरे को नगर पालिका परिषद सीधी की कचरा गाड़ी में भरकर कर प्रसंस्करण इकाई में ले कर जाएगी। इसी प्रकार सभी विद्यालयों में वांछित स्वच्छता के मापदंडों का अनुपालन करने नगर पालिका के द्वारा स्कूल में दौरा कर समझाइए दी जाएगी। यह नगर पालिका परिषद सीधी की सकारात्मक पहल है। सीमित संसाधनों का बेहतर उपयोग करके शहर को स्वच्छ रखने की दिशा में आगे बढ़ने के प्रयास किए जाएंगे जिसमें नागरिकों की सहभागिता सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। जब तक व्यवहार परिवर्तन नहीं होगा तब तक संसाधनों के होने के बावजूद भी कचरा फेंकने की प्रवृत्ति बनी रहती है।

विचार

वैज्ञानिक युग की देन है सामाजिक इतिहास

तिहास के क्षेत्र का वर्गीकरण वैज्ञानिक युग की देन है। सामाजिक इतिहास, इतिहास की एक सबसे महत्वपूर्ण शाखा है। कोम्ते के अनुसार इतिहास सामाजिक भौतिक शास्त्र है। इसके अंतर्गत् मानवीय व्यवहार के सामान्य नियमों का अध्ययन किया जाता है। टायन्वी का कहना है कि इतिहास का निर्माण सामाजिक अणु तत्वों से हुआ है। इतिहास का विकास व्यक्तियों तथा राष्ट्रों से नहीं, बल्कि विभिन्न युगीन समाजों से हुआ है।सामाजिक इतिहास के अभाव में इतिहास बंजर तथा अवर्णनीय है। आदिकाल से आधुनिक युग तक इतिहास क्षेत्र का स्वरूप निरंतर परिवर्तनशील रहा है। इसके विकसित स्वरूप का एकमात्र आधार विभिन्न युगों के सामाजिक मूल्य तथा उसकी सामाजिक आवश्यकताएं रही है। समाज का क्षेत्र काफी विस्तृत है और समाज के सभी क्षेत्र के विषयों का इतिहासकार उचित विवरण एक साथ नहीं दे सकता है। इसलिए आधुनिक इतिहासकारों ने इतिहास क्षेत्र का वर्गीकरण किया है। आधुनिक इतिहासकारों के वर्ग में प्रत्येक इतिहासकार विशिष्ठ विषय का विशेष ज्ञान रखता है और अपने ज्ञान से संबंधित सामाजिक, आर्थिक अथवा अन्य विषयों की विवेचना करता है। इसके अंतर्गत् अनेक छोटी-से-छोटी शाखाओं पर शोध करके इतिहासकारों ने विशिष्ठ ज्ञान को प्रस्तुत किया है। इस प्रकार इतिहासकारों ने अतीत कालिक घटनाओं के आधार पर ।माजिक प्रश्नों का उत्तर देने के लिए इतिहास क्षेत्र का वर्गीकरण किया है।सामाजिक इतिहास को महत्वपूर्ण बनाने का श्रेय ट्रेनेलियन को जाता है। उन्होंने सामाजिक इतिहास के अंतर्गत् अतीत में लोगों के दैनिक जीवन, परिवार का स्वरूप, विभिन्न वर्गों का पारस्परिक आर्थिक संबंध, ग्रहस्थ जीवन, श्रमिकों की दशा, प्रकृति के प्रति मानवीय दृष्टिकोण, सांस्कृतिक जीवन तथा सामान्य परिस्थितियों से उत्पन्न धर्म, साहित्य, संगीत, वास्तुकला, शिक्षा तथा साहित्य है। रेनिलर ने कहा है कि- सामाजिक इतिहास, आर्थिक इतिहास की पृष्ठभूमि तथा राजनीतिक इतिहास की कटौती हैं। ट्रेवेलियन ने भी कहा है कि सामाजिक इतिहास के अभाव में आर्थिक इतिहास माध्यम तथा राजनीतिक इतिहास अवर्णनीय है। आदिकालीन परिस्थितियों को जानना अत्यधिक आवष्यक है। मनुश्य अपने जीवन में बहुत कुछ विगत से जानता व सीखता है। आदिकाल में भारतीय संस्कृति का जो स्वरूप मिलता है।

महिला विरोधी अपराध के दलदल में भद्रलोक

अमेश चतुर्वेदी

बंकिम चंद्र की शस्य श्यामला माटी वाला पश्चिम बंगाल शक्ति पूजक समाज है। शरद ऋतु के स्वागत के साथ बंगाल की धरती दुर्गा के स्वागत में हर साल विभोर होती रही है। बंगाल में महिलाओं का समान की कैसी परंपरा है, इसे समझने के लिए दुर्गा पूजा के विधान को समझना चाहिए। जहां मूर्ति बनाने के लिए उन वेश्याओं के घर से पहली मिट्टी लाई जाती है, जिन्हें आम तौर पर समाज त्याज्य और गंदा मानता है। बंगाल की धरती कैसी नारी पूजक रही है, किस तरह वह नारियों का समान करती रही है, इसके उदाहरण आजादी के आंदोलन के इतिहास में जैसे मिलते हैं, अन्य राज्यों में कम। स्वाधीनता संग्राम में जिन तीन महिलाओं ने आगे बढ़कर हिस्सा लिया और अपने ज्ञान और संघर्ष से भारत को आलोकित किया, वे तीनों बंगाल की बेटियां थी।

पहली थीं अरूणा गांगुली, जो बाद में अरूणा आसफ अली बनीं, दूसरी थीं सुचेता मजूमदार जो बाद में सुचेता कृपलानी के नाम से प्रसिद्ध हुईं। तीसरीं थीं सरोजिनी चट्टोपाध्याय जो बाद में भारत कोकिला सरोजिनी नायडू बनीं। बंगाल की माटी नारी की कितना सम्मान करती रही है, उसका एक और उदाहरण कमला देवी चट्टोपाध्याय भी रहीं। जब भारत के अन्य इलाकों की महिलाएं घूंघट के पीछे सिर्फ परिवार के कोल्हू में पिस रहीं थीं, तब बंगाल ने अपनी बेटियों को वाजिब सम्मान दिया और उन्हें आगे बढ़ाया। उस बंगाल में कभी महिलाओं के साथ बदसलूकी की कल्पना तक नहीं की जाती थी। वहां अब हालात कैसे बदल गए हैं, इसका अंदाजा लगाने के लिए राधागोविंद कर अस्पताल में हुई घटना को उदाहरण के रूप में लिया जा सकता है। समूचा देश अपनी आजादी की 77 वीं सालगिरह के जश्न में थककर पंद्रह अगस्त की रात जब मीठी नींद के आगोश में था, भद्रलोक की राजधानी कोलकाता के राधा गोविंद कर यानी आरजी कर अस्पताल में जूनियर रेजिडेंट डॉक्टर की बर्बरता पूर्वक रेप के बाद हत्या कर दी गई। बंगाल में देर रात तक दफ्तर से लौटने वाली लड़कियों की कभी घरवाले चिंता तक नहीं करते थे, अब वे परेशान हो उठे हैं। बंगाल के लोग अपनी बच्चियों के लिए चिंतित हो उठे हैं। बंगाल की धरती पर शायद यह पहली ऐसी घटना है, जिसमें किसी महिला के साथ ऐसी बर्बरता की गई है। इससे शक्तिपूजक बंगाली समाज का क्रोध और क्षोभ से भरना स्वाभाविक है। दिलचस्प यह है कि पश्चिम बंगाल इकलौता ऐसा राज्य है, जिसे महिला मुख्यमंत्री का गौरव हासिल है। महिला के राज में किसी महिला के साथ ऐसा दुराचार लोगों के गले आसानी से नहीं उतर रहा। इसलिए बंगाल इन दिनों खौल रहा है। बंगाल के चुनिंदा बुद्धिजीवियों को छोड़ दें तो समूचा बौद्धिक समाज सड़कों पर उतर आया है। जो चुप हैं या व्यवस्था की तरफदारी कर रहे हैं, वे सत्ताधारी पार्टी के साथ हैं, सांसद या किसी अन्य पद पर हैं। अभी बहुत दिन नहीं हुआ, जब पश्चिम बंगाल के संदेशखाली से भी महिलाओं से बलात्कार की खबरें सामने आईं थीं। वहां की घटना की जब परतें खुलने लगीं तो पता चला कि रेप की घटनाएं अपराध और राजनीति के नापाक गठजोड़ का नतीजा हैं। संदेशखाली को लेकर बंगाली समाज में उबाल तो आया, लेकिन वैसा नहीं, जैसा आरजी कर अस्पताल की दुराचार के बाद दिख रहा है। शायद संदेशखाली की पीड़िताएं ग्रामीण इलाकों की हैं, जबकि आरजी कर की घटना उस कोलकाता शहर की है, जिसे भद्रलोक समाज के लिए जाना जाता है। पश्चिम बंगाल की कड़वी सच्चाई बांग्लादेश से हो रही अवैध घुसपैठ। अवैध घुसपैठियों के समर्थन में बीजेपी छोड़ तकरीबन समूचा बंगाली राजनीति है। 34 साल के वामपंथी शासन के दौरान इस घुसपैठ को वैधता मिली। वामपंथी शासन व्यवस्था के दौरान पार्टी कैडर के नाम पर बड़ा झुंड उभरा। सरकार पर संगठन का नियंत्रण होना चाहिए, लोकतांत्रिक व्यवस्था में इसे स्वीकार किया जा सकता है। लेकिन संगठन की ओर से समानांतर व्यवस्था चलाना और शासन में हर स्तर पर हस्तक्षेप शासन की निष्पक्षता को तो खत्म करता ही है, शासन को पंगु भी बना देता है। प्रांत से लेकर ब्लॉक स्तर तक स्थापित वामपंथी व्यवस्था ने ऊपर से नीचे तक प्रशासन को अपना गुलाम बनाने में कामयाब रहा। प्रशासन और समानांतर पार्टी व्यवस्था ने मिलकर अपराध और राजनीति का मजबूत गठजोड़ बनाया। इस गठजोड़ में पैसा था, पॉवर था, ताकत थी। नीचे से मिले पैसे उपर तक पहुंचते रहे। जनता ठगी जाती रही है। पश्चिम बंगाल का समाज उस संस्थानिक व्यवस्था से इतना परेशान था कि संघर्षशील ममता बनर्जी में नई उम्मीद दिखी। बंगाली समाज को लगा कि संघर्षशील ममता नई बयार बनकर पश्चिम बंगाल की व्यवस्था में जमी काई को साफ कर देगी। उन्हें उम्मीद थी कि ममता अपने राजनीतिक औजारों से बंगाल की व्यस्था में जमे नासूर को साफ कर देंगी। लेकिन अफसोस ऐसा नहीं हुआ। ममता भी उसी कदम पर चल पड़ी। निचले स्तर पर जो वामपंथी कैडर था, वह ममता का कार्यकर्ता बन गया। अवैध घुसपैठ बनती रही। घुसपैठियों या पूर्वी बंगाल के लोगों को पश्चिम बंगाल को लोग बांगाल बोलते हैं। कहने का मतलब यह है कि बांगाल के हवाले होती रही राजनीति और सीमा के पार तक के अल्पसंख्यक तुष्टिकरण से प्रशासन लगातार या तो पंगु होता गया या फिर सत्ताधारी तंत्र का चारण बनता गया। प्रशासन का यह चारण रूप 16 अगस्त को भी दिखा, जब आरजी कर की पीड़िता की रिपोर्ट साढ़े ग्यारह बजे रात को दर्ज की गई, जबकि उसके साथ बलात्कार और उसका मर्डर पंद्रह अगस्त की रात को दो से ढाई बजे के बीच हो चुका था। इसे सुप्रीम कोर्ट ने भी नोटिस किया और कोलकाता पुलिस को डांट भी पिलाई। सुप्रीम कोर्ट जजों ने तो यहां तक कहा कि अपने तीस साल में ऐसा कभी होते नहीं देखा। पश्चिम बंगाल में ही हो सकता है कि भ्रष्टाचार के आरोप में पुलिस अधिकारी के घर केंद्रीय एजेंसी छापा मारने पहुंचे तो मुख्यमंत्री खुद दल बल अपने भ्रष्ट अधिकारी के पक्ष में धरना देने पहुंच जाएं। कुछ इसी अंदाज में ममता की अगुआई में कोलकाता में बलात्कार और कत्ल की घटना के विरोध में धरना दिया गया। कह सकते हैं कि यह सरकार के खिलाफ सरकार का धरना था। ऐसा दुनिया के किसी भी लोकतांत्रिक समाज में कम से कम अब तक तो नहीं ही देखा गया है। ममता ने चूंकि प्रशासन में किसी तरह का गुणात्मक बदलाव नहीं किया, बल्कि वामपंथ जैसी कैडर व्यवस्था विकसित कर ली और उसे छूट दी। अल्पसंख्यक कार्यकर्ताओं और नेताओं के सामने स्थानीय पुलिस झुकने को मजबूर हो गई। इससे राज्य में अपराध बढ़ा और पुलिस का इकबाल कम हुआ। पुलिस का भरोसा अगर बना रहता तो शायद पश्चिम बंगाल में अपराध की घटनाएं इतनी ज्यादा नहीं बढ़तीं। पुलिस की लाचारगी तो आरजी कर बलात्कार में बार-बार नजर आई है। बंगाल के बारे में कहा जाता रहा है कि बंगाल जो आज सोचता है, वैसी सोच भविष्य में दूसरे राज्यों की होती है। लेकिन बलात्कार और बढ़ती अपराध की घटनाओं को लेकर नहीं कह सकते कि बंगाल से बाकी राज्यों में उससे ज्यादा हो सकता है। ऐसी सोच होनी भी नहीं चाहिए। लेकिन यह उम्मीद जरूर करनी चाहिए कि आगे की सोच रखने वाला भद्रलोक इस दिशा में भी सोचेगा। उसका गुस्सा एक ऐसे बंगाल की रचना करेगा, जहां की धरती में रवींद्र संगीत गूंजता रहेगा, जहां बंकिम के गीत गाए जाते रहेंगे। जहां उसकी नारियां स्वाधीन ढंग से काम कर सकेंगी और समाज में निर्भीक तरीके से आगे बढ़ सकेंगी। जिसमें सिंदूर खेला होगा, घुंघुंची नृत्य होगा, दुर्गा देवी की पूजा होगी।

एकता में भाषा भी अवरोध

भाषा, जो दूसरों तक अपने विचारों को पहुंचाने का माध्यम है, उसे भी राष्ट्रीय एकता के सामने समस्या बनाकर खड़ा कर दिया जाता है. अपनी भाषा के प्रति आकषर्ण होना अस्वाभाविक नहीं है और मातृभाषा व्यक्ति के बौद्धिक विकास का सशक्त माध्यम बन सकती है, इसमें कोई संदेह नहीं. पर हमें इस तथ्य को नहीं भुला देना चाहिए कि मातृभाषा के प्रति जितना हमारा आकषर्ण होता है, उतना ही आकषर्ण दूसरों को अपनी मातृभाषा के प्रति होता है। इसलिए भाषाई अभिनिवेश में फंसना कैसे तर्कसंगत हो सकता है? हमारे पूर्वाचर्यों ने एकता की सर्वोत्तम कसौटी प्रस्तुत की थी। वह है- जो तुम्हारे लिए प्रतिकूल है, वह तुम दूसरों के लिए मत करो। हमारा भाषाई प्रेम उस सीमा तक ही होना चाहिए जहां दूसरों के भाषाई प्रेम से उसकी टक्कर न हो। हर प्रांत का अपना भाषाई प्रेम है। उनके पारस्परिक संपर्क के लिए एक जैसी भाषा भी अपेक्षित होती है, जो उनके प्रेम को अक्षुण्ण रखते हुए एक-दूसरे को मिला सके। वह राष्ट्रीय भाषा होती है। प्रांतीय भाषा के प्रेम को इतना उभार देना कैसे उचित हो सकता है, जिससे प्रांतीय और राष्ट्रीय भाषाओं में परस्पर टकराहट पैदा हो जाए। राष्ट्रीय एकता के लिए इस विषय पर गंभीर चिंतन आवश्यक है। भाषा की समस्या को मैं सामयिक समस्या मानता हूं।

भारत विश्व में सबसे तेज गति से आगे बढ़ती अर्थव्यवस्था बना रहेगा

प्रह्लाद सबनानी

वित्तीय वर्ष 2024-25 की प्रथम तिमाही (अप्रेल-जून 2024) में सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि दर के आंकडें जारी कर दिए गए हैं एवं हर्ष का विषय है कि भारत अभी भी विश्व में सबसे तेज गति से आगे बढ़ती अर्थव्यवस्था बनी हुई है। वित्तीय वर्ष 2024-25 की प्रथम तिमाही में भारत के सकल घरेलू उत्पाद में 6.7 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है। जबकि वित्तीय वर्ष 2023-24 की प्रथम तिमाही (अप्रेल-जून 2023) में 8.2 प्रतिशत की वृद्धि दर दर्ज हुई थी तथा पिछली तिमाही (जनवरी मार्च 2024) में वृद्धि दर 7.8 प्रतिशत की रही थी। भारतीय रिजर्व बैंक ने अप्रेल-जून 2024 तिमाही में 7.1 प्रतिशत की वृद्धि दर का अनुमान लगाया था। पिछले लगातार 5 तिमाही के दौरान भारत के सकल घरेलू उत्पाद में यह सबसे कम वृद्धि दर है। हालांकि चीन में 4.7 प्रतिशत की वृद्धि दर दर्ज हुई है तथा विश्व की अन्य बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में वृद्धि दर भारत की तुलना में अभी भी बहुत कम बनी हुई है। भारत में वित्तीय वर्ष 2024-25 की प्रथम तिमाही में सकल घरेलू उत्पाद में कम हुई वृद्धि दर के पीछे कुछ महत्वपूर्ण कारण बताए गए है। प्रथम तो इस तिमाही में लोक सभा चुनाव सम्पन्न हुए हैं जिसके चलते आम जनता ने अपने खर्चे को रोक रखा था। साथ ही, लोकसभा चुनाव के समय केंद्र सरकार एवं राज्य सरकारों द्वारा कोई भी बड़ा निर्णय नहीं लिया जा सकता है जिसके चलते सरकारों को अपने खर्चों को नियंत्रण में रखना होता है, इससे देश की विकास दर पर प्रभाव पड़ता है। दूसरे, इस तिमाही के दौरान देश में अत्यधिक गर्मी के चलते पर्यटन एवं कृषि के क्षेत्र में विकास दर अत्यधिक कम हो गई है। कृषि के क्षेत्र में वित्तीय वर्ष 2024-25 की प्रथम तिमाही में वृद्धि दर केवल 2 प्रतिशत की रही है जो पिछले वर्ष की इसी तिमाही में 3.7 प्रतिशत की रही थी। परंतु, वित्तीय वर्ष 2024-25 की द्वितीय तिमाही में मानसून ने लगभग पूरे देश में तेज गति पकड़ ली है अत: विभिन्न फसलों के बुआई के क्षेत्र में अच्छी वृद्धि दर्ज हुई है इसलिए वित्तीय वर्ष 2024-25 के द्वितीय एवं तृतीय तिमाही (जुलाई-सितम्बर एवं अक्टोबर-दिसम्बर 2024) में कृषि क्षेत्र में वृद्धि दर के आकर्षक रहने की सम्भावना व्यक्त की जा रही है। खरीफ मौसम की फसल के साथ ही अब रबी मौसम की फसल में भी अच्छी वृद्धि दर रहने की सम्भावना है क्योंकि देश के विभिन्न जलाशयों में पानी के संचयन में भारी वृद्धि दर्ज हुई है, जिसे कृषि क्षेत्र में सिंचाई के लिए उपयोग किया जा सकेगा। इन्हीं कारणों के चलते वैश्विक क्रेडिट रेटिंग एजेन्सी मूडीज ने वित्तीय वर्ष 2024-25 में भारत के आर्थिक विकास दर के अपने अनुमान को बढ़ाकर 7.2 प्रतिशत कर दिया है, मूडीज ने पहिले यह अनुमान 6.8 प्रतिशत का लगाया था। विनिर्माण इकाईयों द्वारा किए गए उत्पादन में अप्रेल-जून 2024 की तिमाही में 7 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज हुई है जबकि पिछले वर्ष की इसी तिमाही में 5.7 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज हुई थी। निर्माण के क्षेत्र में 8.6 प्रतिशत एवं सेवा के क्षेत्र में 7.1 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज हुई है। ट्रेड, ट्रान्स्पोर्ट, होटल, टेलिकॉम की ग्रोथ 5.7 प्रतिशत की रही है। विनिर्माण, निर्माण एवं कोर इंडस्ट्री को मिलाकर बनने वाले सेकेण्डरी सेक्टर में वृद्धि दर बढ़ी है। वित्तीय वर्ष 2023-24 की प्रथम तिमाही में यह 5.9 प्रतिशत की रही थी जो वित्तीय वर्ष 2024-25 की प्रथम तिमाही में बढ़कर 8.4 प्रतिशत की हो गई

है। यह वृद्धि दर देश में निजी उपभोग के बढ़ने की ओर इशारा कर रही है। विश्व में बहुत लम्बे समय से चल रहे दो युद्धों के बीच भारत की उक्त आर्थिक विकास दर अच्छी विकास दर ही कही जाएगी। एक युद्ध तो रूस यूक्रेन के बीच चल रहा है एवं दूसरा इजराईल एवं हम्मास के बीच चल रहा है। इजराईल के साथ युद्ध में तो लेबनान एवं ईरान भी कूदने को तैयार बैठें हैं। साथ ही, यूरोपीयन देशों में कुछ देशों की आर्थिक विकास दर में कमी होती दिखाई दे रही है। जापान एवं अमेरिकी अर्थव्यवस्थाओं में भी विकास दर में कमी आंकी गई है। जर्मनी एवं चीन भी अपनी अपनी अर्थव्यवस्थाओं में वृद्धि दर को बढ़ाने हेतु संघर्ष करते हुए दिखाई दे रहे हैं। जापान एवं जर्मनी में यदि विकास की रफ्तार कम होती है एवं भारत की आर्थिक विकास दर यदि इसी रफ्तार से आगे बढ़ती है तो शीघ्र ही भारत, जापान एवं जर्मनी की अर्थव्यवस्थाओं को पीछे छोड़ते हुए विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा। अभी भारत विश्व की पांचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है और जापान एवं जर्मनी ही भारतीय अर्थव्यवस्था से थोड़ा आगे बने हुए हैं।

अर्थ से सम्बंधित कुछ महत्वपूर्ण क्षेत्रों में भारत सराहनीय प्रगति करता हुआ दिखाई दे रहा है। जैसे - (1) पिछली तिमाही में भारत के निर्यात में 8.7 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज हुई है जबकि वैश्विक स्तर पर यह वृद्धि दर केवल एक प्रतिशत की रही है।

(2) बैंकों द्वारा प्रदान किए जा रहे ऋणों में लगातार वृद्धि दर 15 प्रतिशत से ऊपर बनी हुई है, विशेष रूप से कृषि के क्षेत्र में ऋण की मांग (जुलाई 2024 में 18.1 प्रतिशत की वृद्धि दर) एवं विनिर्माण के क्षेत्र में ऋण की मांग (जुलाई 2024 में 10.2 प्रतिशत की वृद्धि दर) बनी हुई है। इससे देश की अर्थव्यवस्था के तेज गति से आगे बढ़ने के स्पष्ट संकेत दिखाई दे रहे हैं।

(3) वित्तीय वर्ष 2024-25 में जुलाई 2024 माह के अंत तक समाप्त अवधि के दौरान केंद्र सरकार की कुल आय 10.23 लाख करोड़ रुपए की रही है। यह वित्तीय वर्ष 2024-25 के आय के कुल बजट का 31.9 प्रतिशत है और इसमें 7.15 लाख करोड़ रुपए की करों की मद से आय तथा 3.01 लाख करोड़ रुपए की अन्य मदों से आय भी शामिल है।

(4) इस दौरान केंद्र सरकार का राजकोषीय घाटा भी नियंत्रण में रहा है एवं यह 2.77 लाख करोड़ रुपए तक सीमित रहा है जो वित्तीय वर्ष 2024-25 के कुल बजटीय घाटे का केवल 17.2 प्रतिशत ही है।

(5) इसी प्रकार विदेशी मुद्रा भंडार भी 23 अगस्त 2024 को समाप्त हुए सप्ताह में 702 करोड़ अमेरिकी डॉलर से बढ़कर 68,168 करोड़ अमेरिकी डॉलर के नए रिकार्ड उच्च स्तर पर पहुंच गया है। पिछले सप्ताह में भी विदेशी मुद्रा भंडार 454 करोड़ अमेरिकी डॉलर से बढ़कर 67,466 करोड़ अमेरकी डॉलर के स्तर पर पहुंच गया था।

(6) जुलाई 2024 माह में 8 कोर सेक्टर (कोयला, कच्चा तेल, प्राकृतिक गैस, रिफाइनरी प्रोडक्ट, उर्वरक, इस्पात, सिमेंट एवं बिजली उत्पादन के क्षेत्र) में वृद्धि दर 6.1 प्रतिशत की रही है जो जून 2024 माह में 5.1 प्रतिशत की रही थी।

नाबालिग ने पड़ोसी को मारा चाकू

मॉर्निंग वॉक पर निकले युवक से मोबाइल लूटा, 6 माह में चाकूबाजी की 80 वारदातें

मीडिया ऑडीटर, रायपुर एजेंसी। रायपुर में रविवार देर रात एक नाबालिग और उसके भाई ने पड़ोसी पर हमला कर दिया। गाली-गलौज करते हुए धमकी दी और फिर चाकू से वार कर दिए। इसके बाद वहां से भाग निकले। वारदात का वीडियो भी वायरल हो रहा है। मामला टिकरापारा थाना क्षेत्र का है।

वहीं तेलीबांधा क्षेत्र में भी सोमवार तड़के मॉर्निंग वॉक पर निकले एक युवक को बाइक सवारों ने चाकू मारकर लूट लिया। युवक की पसली में चाकू से वार किया गया है। रायपुर में चाकूबाजी की घटनाएं लगातार बढ़ रही हैं। 6 माह में 80 मामले चाकूबाजी के सामने आ चुके हैं।

पुरानी रंजिश में किया हमला: जानकारी के मुताबिक, मठमुरैना निवासी आशु यादव के परिवार से पड़ोसियों की रंजिश है। इसी को लेकर नाबालिग आरोपी और उसके भाई ने आशु पर चाकू से वार कर दिए।

आरोपियों के हमले में आशु को कई जगह चोटें आई हैं। इसी दौरान घायल आशु यादव के घरवालों में नाबालिग और उसके भाई का वीडियो बना लिया। परिवार के लोगों ने उसे अस्पताल में भर्ती कराया है। बताया जा रहा है कि आशु यादव का परिवार आरोपियों के खिलाफ पहले भी थाने में शिकायत कर चुका है।

नाबालिग को लाया गया थाने: मामले में टिकरापारा थाना प्रभारी मनोज सिंह ने बताया कि चाकूबाजी में युवक को मामूली चोट आई है। पीड़ित पक्ष ने थाने में शिकायत दर्ज कराई थी, जिसके बाद नाबालिग को पकड़कर थाने लाया गया है। आरोपी से वारदात के बारे में पूछताछ की जा रही है।

घायल युवक और चाकू मारने वाला नाबालिग पड़ोसी हैं। दोनों का घर लगा हुआ है आए दिन दोनों परिवार के लोगो की बीच छोटी-छोटी बातों को लेकर विवाद होता रहता है। इससे पहले भी घायल युवक ने पड़ोसी के खिलाफ में रिपोर्ट लिखाई थी।

चाकू मारकर छीन ले गए मोबाइल: वहीं दूसरी वारदात तेलीबांधा क्षेत्र में हुई। वीआईपी रोड पर सोमवार तड़के करीब 4.30 बजे मोवा निवासी मोहम्मद जाहिद मॉर्निंग वॉक पर निकले थे। इसी दौरान बाइक सवार 3 युवक पहुंचे और उन्हें रोक लिया। जाहिद के रुकते ही युवकों ने उस पर चाकू से वार कर दिया और मोबाइल छीनकर भाग निकले।

वारदात के बाद जाहिद किसी तरह अपने दोस्त के साथ थाने पहुंचकर शिकायत की। हालांकि अभी तक एफआईआर दर्ज नहीं की गई है।

रायपुर में अगस्त में चाकूबाजी के 3 मामले-

13 अगस्त: दो बदमाशों ने शराब दुकान के सेल्समैन पर चाकू से हमला किया था, जिससे वो जख्मी हो गया था। सेल्समैन ने शराब दुकान के बाहर गाली-गलौज कर रहे लड़कों को रोका तो लड़कों ने चाकू मारा था। घटना तिल्दा-नेवरा थाना क्षेत्र का है।

18 अगस्त: शराबी युवक ने पत्नी और सास पर चाकू से हमला कर दिया था। हमले में दोनों मां-बेटी गंभीर रूप से घायल हुए थे।।

18 अगस्त: खम्हारडीह में शराब दुकान में पैसे की विवाद की बात पर दो नाबालिग समेत 4 लोगों ने एक युवक को चाकू मार दिया। इन दोनों मामलों में पुलिस ने 5 लोगों को गिरफ्तार किया था।

रायपुर पुलिस के आंकड़ों के मुताबिक जुलाई 2024 तक जिले में चाकू से हमला करने के 80 मामले सामने आ चुके हैं। हालांकि पुलिस का कहना है कि पिछले साल 2023 के मुकाबले इसमें कमी आई है।

घर की दीवार गिरने से महिला की मौत

रसोई घर में बर्तन निकालने गई थी महिला, तभी भर-भराकर गिर गया पूरा मकान

मीडिया ऑडीटर, रायगढ़ एजेंसी। छत्तीसगढ़ के रायगढ़ जिले में कच्ची दीवार गिरने से एक महिला की मौत हो गई। महिला दीवार के मलबे में दबी रही, जिससे उसका दम घुट गया। बताया जा रहा है कि बारिश की वजह से दीवार कमजोर हो गई थी। हादसा सुबह करीब 5 बजे हुआ है। मामला तमनार थाना क्षेत्र के कसडोल का है।

मिली जानकारी के मुताबिक मरने वाली महिला का नाम गुरुवारी धनवार पति सुखलाल धरवार (42) है। खाना बनाने के लिए बर्तन निकालने रसोई घर में गई थी। रसोई घर की दीवार भर-भराकर गिर गई। पति सुखलाल उसे निकालने की कोशिश की, लेकिन तब तक महिला ने दम तोड़ दिया था।

बारिश से कमजोर हो गया रसोई घर: स्थानीय और परिजनों ने बताया कि रसोई घर बहुत पुराना हो चुका था। इलाके में रुक-रुककर हो रही बारिश से दीवार कमजोर हो चुकी थी। महिला मवेशी चराने का काम करती थी। अपने पति और बेटे के साथ रहती थी।

गांव में पसरा सन्नाटा: मामले में पुलिस को जानकारी मिलते ही मौके पर पहुंची। । प्रारंभिक पूछताछ उसके पति और आसपास के लोगों से की है। फिलहाल मामले में आगे की जांच के लिए पुलिस जुट गई है। गांव में सन्नाटा पसरा हुआ है।

अस्पताल में मरीज को बनाया बंधक

पैर फ्रेक्चर होने पर प्रबंधन बोला आयुष्मान योजना के तहत होगा बिना पैसे का इलाज, अब मांगे 51 हजार रुपए

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर एजेंसी। छत्तीसगढ़ के बिलासपुर के प्राइवेट अस्पताल में मरीज को बंधक बनाने का मामला सामने आया है। दरअसल, केयर एंड क्योर हॉस्पिटल में आयुष्मान योजना के तहत मरीज का बिना पैसे दिए मुफ्त में इलाज कराने का झांसा देकर उसे भर्ती कर लिया गया। वहीं, अब इलाज होने के बाद 51 हजार रुपए की डिमांड की जा रही है। पैसे का न तो उन्हें बिल दिया गया है और मरीज को ले जाने से भी रोक दिया गया है।

मस्तूरी निवासी रामनारायण दिवाकर की पत्नी अनिता दिवाकर बीते दिनों खेत में काम करने गई थी। तभी उसके पैर में फ्रेक्चर हो गया और वह चल नहीं पा रही थी। इस पर परिजन उसे लेकर मस्तूरी अस्पताल पहुंचे, जहां से उन्हें बिलासपुर रेफर कर दिया गया।

अस्पताल प्रबंधन बोला मुफ्त में होगा इलाज: रामनारायण ने बताया कि 30 अगस्त को वह अपनी पत्नी का इलाज कराने केयर एंड क्योर अस्पताल पहुंचा, यहां अस्पताल प्रबंधन ने आयुष्मान योजना के तहत निःशुल्क इलाज होने की बात कही और उसकी पत्नी को भर्ती कर लिया। इस दौरान उसे बताया गया कि उसे केवल रूम चार्ज अलग से देना पड़ेगा, जिसके लिए उससे 20 हजार रुपए जमा कराया।

डिस्चार्ज करने से पहले मांगे 51 हजार रुपए: सोमवार को अनिता को इलाज के बाद डिस्चार्ज कर दिया गया और परिजन को बोला गया कि उसे घर ले जाए। इस दौरान उन्हें 51 हजार रुपए खर्च होने और पैसे देने के बाद ही महिला की छुट्टी करने की बात कही गई। परिजनों ने जब उन्हें फ्री में इलाज होने की बात कही और बिल देने की मांग की, तब प्रबंधन ने उन्हें बिल देने से भी मना कर दिया।

अस्पताल प्रबंधन ने नहीं की बातः इस पूरे मामले में अस्पताल प्रबंधन से बात करने की कोशिश की गई और संचालक डॉ सिद्धार्थ वर्मा से उनका पक्ष जानने का प्रयास किया गया। लेकिन उन्होंने बात करने से मना कर दिया। इधर, मरीज के परिजनों ने मामले की शिकायत स्वास्थ्य विभाग के साथ ही सिविल लाइन थाने में की है।

कलेक्टर ने प्राचार्यों से शिक्षा की गुणवत्ता पर की चर्चा

कलेक्टर ने स्कूल शिक्षा विभाग की ब्लॉक स्तरीय प्राचार्यों की समीक्षा बैठक ली

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी निप्र। कलेक्टर डी.राहुल वेंकट की अध्यक्षता में जनपद पंचायत भरतपुर के सभागार में स्कूल शिक्षा विभाग की समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया । बैठक में परियोजना निदेशक नितेश उपाध्याय, जिला शिक्षा अधिकारी अजय कुमार मिश्रा, विकास खंड शिक्षा अधिकारी भरतपुर इस्माइल खान, सहायक विकासखंड शिक्षा अधिकारी सुदर्शन पैंकरा, बीआरसी देवेन्द्र कुमार गुप्ता व विभिन्न स्कूल के प्राचार्य और संबंधित विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे। बैठक में कलेक्टर ने सत्र 2023-24 की शैक्षणिक सत्र के परीक्षा परिणाम एवं शिक्षा की गुणवत्ता स्तर की विस्तार से समीक्षा की। उन्होंने स्कूलों में बुनियादी सुविधाओं, शिक्षकों की उपस्थित, छात्रों के नामांकन और उनके शैक्षणिक प्रदर्शन की स्थिति पर विशेष रूप से समीक्षा की। कलेक्टर श्री वेंकट ने निर्देश दिए हैं कि जिन स्कूलों में बुनियादी सुविधाओं की कमी है, उन्हे तुरंत पूरा किया जाए और स्वच्छता, शौचालय की सुविधा, बिजली, पेयजल की उपलब्धता आदि पर विशेष ध्यान दिया जाए। सभी प्राचार्यों को निर्देशित करते हुए कमजोर छात्रों का चिन्हांकन कर उपचारात्मक शिक्षा की कक्षा संचालित करने का निर्देश दिए गए। जो प्राचार्य अनुपस्थित थे उनसे टेलीफ़ोनिक चर्चा की गई।

महिला ने अरपा नदी में लगाई छलांग

ससुराल वालों की प्रताड़ना से थी परेशान, तलाश में जुटी ,एसडीआरएफ की टीम

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर एजेंसी। बिलासपुर में रविवार को ससुराल वालों की प्रताड़ना से तंग आकर महिला जान देने के लिए अरपा नदी में छलांग लगा दी। पुलिस और एसडीआरएफ की टीम लापता महिला की तलाश कर रही है। बताया जा रहा है कि महिला गहराई में समा गई है, जिससे अभी तक नहीं मिली है। घटना सिटी कोतवाली थाना क्षेत्र की है। मिली जानकारी के मुताबिक टिकरापारा में रहने वाली साहिला चंद्राकर का ससुराल चकरभाठा में है। वह अपने पति सुनील वाधवानी के साथ रहती है। शादी के बाद से ससुराल वाले उसे आए दिन प्रताड़ित करते थे।

साहिला का पति सुनील से विवाद हुआ: लापता महिला की बड़ी बहन सोनी मानिकपुरी ने बताया कि कुछ दिन पहले ससुरालवालों ने साहिला पर पैसे और गहने चोरी का आरोप लगाया था। इसके बाद वह मायके आ गई थी। वह 2 दिनों से टिकरापारा में रह रही थी। रविवार की देर शाम साहिला का पति सुनील से फिर विवाद हुआ था।

आसपास के लोगों में मचा हड़कंप: मौके पर मौजूद अंकित कैवर्त ने बताया कि वह नदी के पास टहलने के लिए आया था। इस दौरान एक महिला रपटा पर कुछ देर तक खड़ी थी। इसके बाद उसने सीधे नदी में छलांग लगा दी। तत्काल इसकी सूचना पुलिस को दी। अंधेरा होने के कारण पुलिस के जवान नदी के किनारे कुछ देर तक तलाश किए, लेकिन नहीं मिली।

सुबह से महिला की तलाश में जुटी एसडीआरएफ की टीम: पुलिस ने सोमवार की सुबह से एसडीआरएफ की टीम को सूचना दी। एसडीआरएफ की टीम नदी के बीच गहराइयों में महिला की तलाश कर रही है। अब तक उसका कुछ पता नहीं चल सका है।

सड़क हादसे में यूट्यूबर की मौत

दोस्त की हालत गंभीर, टुकड़ों में बंटी स्पोर्ट्स बाइक, पिता बोले- मेरा इकलौता बेटा था

मीडिया ऑडीटर, कोरबा एजेंसी। छत्तीसगढ़ के कोरबा जिले में बाइक सवार यूट्यूबर की सड़क हादसे में मौत हो गई। वहीं साथ में बैठा युवक गंभीर रूप से घायल है। बताया जा रहा है कि हादसा इतना भंयकर था कि बाइक के परखच्चे उड़ गए। बाइक टुकड़ों में बट गई है। मामला दर्री थाना क्षेत्र के बरमपुर नहर का है।

मिली जानकारी के मुताबिक मरने वाले यूट्यूबर का नाम मोहनीश कुमार कर्ष (24) है, जो कुसमुंडा का रहने वाला था। मोहनीश कुमार तेज रफ्तार से कोरबा की ओर जा रहा था, तभी सड़क किनारे पेड़ से जा टकराया। घायल युवक को राहगीरों ने गंभीर हालत में जिला मेडिकल कॉलेज पहुंचाया।

स्पोर्ट्स बाइक से वीडियो बनाने जा रहा था: बताया जा रहा है कि मेडिकल कॉलेज के इलाज के बाद गंभीर हालत में बिलासपुर रेफर कर दिया गया है। बताया जा रहा है कि स्पोर्ट्स बाइक से मोहनीश कुमार यूट्यूब के लिए वीडियो बनाने जा रहा था। वह छत्तीसगढ़ के अलग-अलग इलाकों में जाकर हर रविवार वीडियो बनाकर अपलोड करता था।

वह मेरा इकलौता बेटा था-पिता: मृतक के पिता अरुण कुमार कर्ष ने बताया कि उन्हें फोन पर घटनाक्रम की जानकारी मिली। वह मौके पर पहुंचे, तब तक उसके बेटे की मौत हो चुकी थी। वीडियो बनाने के लिए निकलता था, जो वापस लौट नहीं सका। वह मेरा इकलौता बेटा था। एक बहन और एक भाई थे।

टायर भी टुकड़ों में बट गया: मामले में पुलिस ने बताया कि लाश को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया गया है। पोस्टमॉर्टम के के बाद परिजनों को शव सौंप दिया जाएगा। गाड़ी बहुत ज्यादा रफ्तार में रही होगी, जिससे गाड़ी का टायर तक टुकड़ों में बट गया है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

जिले में अब तक 933.9 मिमी औसत वर्षा की गयी दर्ज

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी निप्र। मनेन्द्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर जिले में 01 जून से 02 सितंबर 2024 तक 933.9 मिमी औसत वर्षा दर्ज की गई है। कार्यालय कलेक्टर भू-अभिलेख शाखा से प्राप्त जानकारी के अनुसार 1 जून से अब तक सर्वाधिक वर्षा 1080.6 मिमी मनेन्द्रगढ़ तहसील में तथा न्यूनतम 830.5 मिमी खड़गवां तहसील में दर्ज की गई है। इसके अलावा तहसील केल्हारी में 1043.0 मिमी, तहसील चिरमिरी में 881.8 मिमी, तहसील कोटाडोल में 912.9 मिमी, तहसील भरतपुर में 854.6 मिमी तथा तहसील खड़गवां में 830.5 मिली मीटर वर्षा दर्ज की गई है।

स्टूडेंट बोले-टीचर गुटखा खाते हैं-बदबू आती है

स्कूल में जड़ा ताला, बलमरापुर में शिक्षक की पिटाई से छात्र के कान का पर्दा फटा

मीडिया ऑडीटर, जांजगीर-चांपा एजेंसी। छत्तीसगढ़ के जांजगीर-चांपा में दो शिक्षकों को हटाने की मांग को लेकर छात्र-छात्राओं ने स्कूल में ताला जड़ दिया है। बच्चों का कहना है कि, टीचर गुटखा खाकर आते हैं। उनके मुंह से बदबू आती है और अच्छे से पढ़ा भी नहीं पाते। मामला बलौदा विकासखंड का है। वहीं दूसरी ओर बलरामपुर जिले में एक शिक्षक के थप्पड़ मारने से 9वीं क्लास के छात्र के कान का पर्दा फट गया। छात्र की गलती सिर्फ इतनी है कि वह शर्ट की आस्तीन मोड़कर स्कूल पहुंचा था। इस पर टीचर भड़क गए और बच्चे को पीट दिया। मामला वाड्रफनगर क्षेत्र का है।

बच्चा बोला- कान में अजीब आवाज आ रही: बात पहले बलरामपुर जिले में स्थित पंडरी हायर सेकेंडरी स्कूल की। यहां पढ़ने वाला 9वीं का छात्र शुक्रवार को शर्ट की आस्तीन मोड़कर स्कूल पहुंचा था। आरोप है कि वहां पढ़ाने वाले शिक्षक चक्रधारी सिंह ने इस पर नाराजगी जताई और बच्चे की पिटाई कर दी।

दोस्त की पत्नी से 12 लाख की ठगी

रिटर्न का झांसा देकर की धोखाधड़ी, एलआईसी के दस्तावेज और चेक पर कराए लिए हस्ताक्षर

मीडिया ऑडीटर, सरगुजा एजेंसी। सरगुजा में महिला से मृत पति के दोस्त और उसकी पत्नी ने 11.80 लाख रुपए की ठगी कर ली। महिला को अच्छे रिटर्न का झांसा देकर पति-पत्नी ने सादे चेक लेकर अपने अकाउंट में राशि ट्रांसफर करा ली। पुलिस ने मामले में रिपोर्ट पर पुलिस ने दोनों आरोपियों के खिलाफ धोखाधड़ी का अपराध दर्ज किया है। मामला गांधीनगर थाना क्षेत्र का है।

जानकारी के मुताबिक, सरगवां के मझलीपारा निवासी भानु राय ने रिपोर्ट दर्ज कराई। पति शंकर राय की मौत के बाद 12 मार्च 2019 को अपने दोनों बच्चों को लेकर मायके अंबिकापुर आ गई। इस दौरान शंकर राय के दोस्त राकेश सिन्हा और उसकी पत्नी कनिका दीक्षित दोनों निवासी कबीर नगर ने साथ देकर भरोसा जीता।

सादे चेक लेकर ट्रांसफर कराए रुपए: भानु राय ने रिपोर्ट में बताया है कि पति शंकर राय ने अपने पैसों में माता-पिता एवं बच्चों की हिस्सेदारी तय कर दी थी। इसे लेकर विवाद था। इस बीच 3 अप्रैल 2019 को राकेश सिन्हा और कनिका दीक्षित उसके घर पहुंचे। कुछ काम बताकर एलआईसी के दस्तावेजों और चेक पर हस्ताक्षर करा दिया।

11 लाख 80 रुपए ट्रांसफर करा लिए: राकेश सिंहा ने 12 अप्रैल 2019 को चेक से दो लाख रुपए और 16 अप्रैल 2019 को तीन लाख बीस हजार अपने खाते में ट्रांसफर किया। राकेश ने अपने पत्नी कानिका दीक्षित के खाते में 7 मई 2019 को चेक से 5 लाख, 28 मई 2019 को 1 लाख 60 हजार रुपए समेत कुल 11 लाख 80 रुपए ट्रांसफर करा लिए। पूछने पर उन्होंने बताया कि बच्चों के नाम पर इन्वेस्ट किया हूं। इन्वेस्टमेंट का ब्याज खाते में आता रहेगा। उन्होंने कोई कागजात नहीं दिए।

पैसे वापस नहीं किए तो दर्ज कराई रिपोर्ट: भानु राय ने बताया कि लंबे समय तक पति-पत्नी ने कोई कागजात नहीं दिया। पैसे वापस मांगने पर वे नहीं दे रहे हैं। अब उन्होंने फोन भी उठाना बंद कर दिया है। मामले की रिपोर्ट पर गांधीनगर पुलिस ने राकेश सिन्हा और कनिका दीक्षित के खिलाफ धारा 4220, 34 का अपराध दर्ज किया है। गांधीनगर थाना प्रभारी प्रदीप जायसवाल ने बताया कि मामले की जांच की जा रही है।

कृषि विभाग तथा पशु पालन विभाग द्वारा किया गया चिन्हांकित ग्रामों का दौरा

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी एजेंसी। कलेक्टर डी. राहुल वेंकट के निर्देशानुसार कृषि विभाग द्वारा (पीएम-जनमन) प्रधानमंत्री जनजातीय न्याय महाअभियान के तहत् विगत 01 सितम्बर 2024 को जिला मनेन्द्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर के ग्राम नौढ़िया बडवाही तथा देवगढ़ का चिन्हाकंन किया गया है।

इसी तारतम्य् में ग्राम देवगढ़ विकासखंड भरतपुर में (पीवीजीटी) विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह परिवार के सेचुरेशन के संबंध में कृषि विभाग और पशुपालन विभाग के जिला अधिकारी और विकास खंड के अधिकारियों ने कर्मचारी के द्वारा क्षेत्र भ्रमण का दौरा कर जानकारी इक्कत्र किया जा रहा है। जिससे संबंधित ग्रामों का समय पर कार्यों को परिपूर्ण किया जा सकें।

ग्राम नौढ़िया बडवाही तथा देवगढ़, विकासखंड भरतपुर में (पीवीजीटी) विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह परिवार के सेचुरेशन के संबंध में कृषि और पशुपालन विभाग के जिला अधिकारियों और विकास खंड के अधिकारियों ने फील्ड विजिट किया। इस दौरे का उद्देश्य कमजोर जनजातीय समूह परिवार के जीवन स्तर में सुधार हेतु आवश्यक योजनाओं और सेवाओं की उपलब्धता का आकलन करना था। फील्ड विजिट के दौरान अधिकारियों ने कमजोर जनजातीय समूह परिवार से सीधे संवाद कर उनकी समस्याओं और जरूरतों को समझा। उन्होंने कृषि और पशुपालन संबंधित योजनाओं के क्रियान्वयन की जानकारी ली और जरूरतमंद परिवारों को इन योजनाओं का अधिक से अधिक लाभ दिलाने के उपाय और सुझाव दिए गए ।

कनाडा में पंजाबी सिंगर एपी ढिल्लों के घर फायरिंग

जालंधर। कनाडा में पंजाब के फेमस सिंगर अमृतपाल सिंह ढिल्लों उर्फ एपी ढिल्लों के घर पर फायरिंग की गई। घटना रविवार रात की है। खबर और इसके वीडियो अब सामने आए हैं। एपी ढिल्लों का घर वैंकूवर इलाके में है। वायरल वीडियो के अनुसार एक शूटर ने गेट के बाहर से 11 गोलियां चलाईं। उसने काले रंग के कपड़े पहने हुए थे। इसकी जिम्मेदारी लॉरेंस गैंग ने ली है। गैंग के गैंगस्टर रोहित गोदारा ने सोशल मीडिया पर पोस्ट भी डाली है। 9 अगस्त को सिंगर एपी ढिल्लों का बॉलीवुड स्टार सलमान खान के साथ गाना ओल्ड मनी रिलीज हुआ था। फायरिंग को इसी से जोड़कर देखा जा रहा है। घटना के बाद भारतीय और कनाडाई एजेंसियां अलर्ट हो गई हैं। एजेंसियों से जुड़े सूत्रों के मुताबिक, वारदात को कनाडा में बैठे लॉरेंस गैंग के हैंडलर गोल्डी बराड़ ने खुद ऑपरेट किया। इससे पहले कनाडा में गैंगस्टर सुक्खा दुन्नेके की हत्या करने भी खुद गोल्डी बराड़ गया था। अभी तक की जांच में ये पता चला है कि सिंगर के घर फायरिंग के वक्त गोल्डी गाड़ी में बैठा हुआ था।

केजरीवाल के पीए बिभव को मालीवाल मारपीट केस में जमानत

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के पूर्व पीए बिभव कुमार को जमानत दे दी। बिभव पर आम आदमी पार्टी की राज्यसभा सांसद स्वाति मालीवाल के साथ मारपीट करने का आरोप है। वे 100 दिनों से जेल में हैं। जस्टिस सूर्यकांत और जस्टिस उज्ज्वल भुइयां की बेंच ने बिभव के जेल में बिताए 100 दिनों का जिक्र किया और कहा कि केस में चार्जशीट भी दायर की जा चुकी है। मालीवाल को आई चोटें सामान्य हैं। इस केस में जमानत मिलनी चाहिए। आप किसी व्यक्ति को ऐसे केस में जेल में नहीं रख सकते हैं। यह मामला तब का है, जब 13 मई को स्वाति मालीवाल केजरीवाल से मुलाकात करने पहुंची थीं। इसके बाद उनकी बिभव कुमार से बहस हुई। बाहर आकर उन्होंने आरोप लगाया कि बिभव ने उनके साथ मारपीट की। जांच के बाद 18 मई को बिभव को गिरफ्तार कर लिया गया था। असिस्टेंट सॉलिसिटर जनरल एसवी राजू ने जमानत का विरोध किया। उन्होंने कहा कि पहले उन गवाहों की जांच हो जानी चाहिए, जो बिभव के प्रभाव में आते हैं। यह महिला अपराध का मामला है, ष्टष्टञ्जङ्क फुटेज से छेड़छाड़ की जा सकती है। उन्हें अभी जमानत दिया जाना ठीक नहीं है। अदालत ने कहा कि केस में चार्जशीट फाइल कर दी गई है। 100 दिन से वे जेल में हैं। मेडिकल रिपोर्ट कहती है कि मालीवाल को आई चोटें सामान्य हैं। ऐसे केस में जमानत मिलती है। असिस्टेंट सॉलिसिटर जनरल को जमानत का विरोध नहीं करना चाहिए।

ईडी ने आप विधायक अमानतुल्लाह की 10 दिन की रिमांड मांगी

नई दिल्ली। अमानतुल्लाह खान पर आरोप है कि दिल्ली वक्फ बोर्ड के अध्यक्ष रहते हुए उन्होंने अवैध भर्तियां और फंड का गलत इस्तेमाल किया। प्रवर्तन निदेशालय ने सोमवार (2 सितंबर) को आम आदमी पार्टी के विधायक अमानतुल्लाह खान को अरेस्ट किया था। शाम को उन्हें राउज एवेन्यू कोर्ट ले जाया गया जहां श्रेष्ठ ने उनकी 10 दिन की रिमांड मांगी। कोर्ट ने इसे लेकर फैसला सुरक्षित रख लिया है। ईडी दिल्ली वक्फ बोर्ड मनी लॉन्ड्रिंग केस में पूछताछ के लिए सुबह अमानतुल्लाह के घर पहुंची थी।

बाबा महाकाल मानव समाज का संरक्षण कर उत्साह बढ़ाते हैं: मुयमंत्री डॉ. यादव

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने आज उज्जैन में बाबा महाकाल की आखिरी राजसी सवारी के अवसर पर अपने संदेश में कहा कि यह मात्र सवारी न होकर बाबा महाकाल का जनता के साथ सीधा सरोकार है। भगवान दर्शन देते हुए अपनी लौकिक दुनिया को अपनी निगाह से देखना चाहते हैं। मनुष्य भी इस अवसर की प्रतिक्षा करते हैं। कालों के काल महाकाल इस दुनिया में सदैव हमारा उत्साह बढ़ाते हैं। सभी का संरक्षण करते हैं। जीवन की ललक जगाते हैं। महाकाल की छबि देवों के देव के रूप में है। बाबा महाकाल एक विलक्षण देव हैं। गरीब से गरीब आदमी के जीवन में वे आशा, अपेक्षा और उत्साह का रंग घोलते हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सवारी में शामिल हुए नागरिकों का स्वागत करते हुए कहा कि बाबा महाकाल की सवारी की विशेषता है कि पूरे सावन में आयोजन होते हैं। पूर्णिमा से पूर्णिमा तक सभी सावन और भादो मास में दो सवारी अमावस्या से अमावस्या तक निकलती है। इस तरह उत्तर भारत और

दक्षिण भारत की परम्पराओं के साथ पूर्व और पश्चिम सभी दिशाओं को शामिल करते हुए बाबा कृपा बरसाते हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि इस वर्ष बाबा महाकाल की सवारी में अनेक आकर्षण जोड़े गए, जिससे सभी को आनंद आया। प्रदेश के अनुसूचित जाति और जनजाति वर्ग के प्रतिनिधि और श्रद्धालुजन भी अपनी लोक कलाओं के प्रदर्शन के साथ सवारियों में शामिल हुए। हमारे लिए बाबा महाकाल समग्र रूप से पूरे प्रदेश के लिए विशेषकर बड़ा देव के नाते से जनजातीय क्षेत्र में भी अत्यंत श्रद्धा से जाने जाते हैं। जनजातीय संस्कृति से अन्य लोग भी परिचित हों, इसलिए उन्हें सवारी में शामिल किया गया। सवारी में पहली बार पुलिस बैंड की आकर्षक प्रस्तुति भी शामिल की गई।

बुलडोजर एशन पर सुप्रीम कोर्ट गाइडलाइन जारी करेगा

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट में सोमवार को देशभर में आरोपियों के खिलाफ बुलडोजर कार्रवाई पर सुनवाई हुई। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि अगर कोई सिर्फ आरोपी है तो प्रॉपर्टी गिराने की कार्रवाई कैसे की जा सकती है? जस्टिस विश्वनाथन और जस्टिस बीआर गवई की बेंच ने कहा, अगर कोई दोषी भी हो, तब भी ऐसी कार्रवाई नहीं की जा सकती है। सुप्रीम कोर्ट जमीयत-उलेमा-ए-हिंद की याचिका पर सुनवाई कर रही है। इसमें आरोप लगाया गया है कि भाजपा शासित राज्यों में मुसलमानों को निशाना बनाया जा रहा है और बुलडोजर एक्शन लिया जा रहा है। अब इस केस की सुनवाई 17 सितंबर को होगी।

अगस्त 2024 = मध्यप्रदेश के छतरपुर में पुलिस पर पथराव के आरोपी की कोठी पर एक्शन मध्यप्रदेश के छतरपुर में 21 अगस्त को कोतवाली थाने पर पथराव के 24 घंटे के भीतर सरकार ने यहां 20 हजार स्क्वायर फीट में बनी 20 करोड़ रुपए की तीन मंजिला हवेली को जमींदोज कर दिया था। जब उनकी हवेली गिराई जा रही थी, तब भी उनके परिवार का कोई सदस्य यहां मौजूद नहीं था। एफआईआर के मुताबिक, चारों भाइयों ने भीड़ को पुलिस पर हमला करने के लिए उकसाया था।

अगस्त 2024 = राजस्थान के उदयपुर में दो बच्चों में चाकूबाजी के बाद आरोपी के घर चला बुलडोजर उदयपुर के एक सरकारी स्कूल में 10वीं में पढ़ने वाले एक बच्चे ने दूसरे को चाकू मारकर घायल कर दिया था। इसके बाद पूरे शहर में आगजनी और हिंसक प्रदर्शन हुए। 17 अगस्त को आरोपी छात्र के घर पर बुलडोजर एक्शन हुआ था। इससे पहले सरकार के निर्देश पर वन विभाग ने आरोपी के पिता सलीम शेख को अवैध बस्ती में बने मकान को खाली करने का नोटिस दिया था।

जून 2024 = उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद और बलिया में 2 आरोपियों की 6 संपत्तियां तोड़ी गईं मुरादाबाद में विवाहिता के अपहरण की कोशिश करने वाले के घर पर बुलडोजर चला था। आरोपी ने अपहरण का विरोध कर रहे महिला के मां-बाप और भाई को गोली मार दी थी।

भाजपा सदस्यता अभियान शुरू

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी ने सोमवार (2 सितंबर) को 'संगठन पर्व, सदस्यता अभियान 2024' लॉन्च किया। इस मौके पर सबसे पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पार्टी की सदस्यता ली। इसके बाद भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और गृह मंत्री अमित शाह समेत भाजपा के बड़े नेताओं ने फिर से पार्टी की सदस्यता ली। पीएम मोदी ने कहा कि आज भाजपा के सदस्यता अभियान का एक और दौर शुरू हो रहा है। भारतीय जनसंघ से अब तक हमने देश में एक नई राजनीतिक संस्कृति लाने की कोशिश की है। हम वो लोग हैं जिन्होंने दीवारों पर कमल भी बड़ी श्रद्धा से पेंट किया। हमें विश्वास था दीवारों पर पेंट किया हुआ कमल कभी न कभी दिलों पर भी पेंट हो जाएगा। पीएम ने आगे कहा कि हमारे कार्यकर्ताओं को लेकर कहा जाता था कि इनका एक पैर रेल में रहता है और दूसरा जेल में। रेल में क्योंकि कार्यकर्ता लगातार भ्रमण किया करते थे। और जेल में इसलिए क्योंकि तब सत्ताधारी एक जुलूस भी नहीं निकालने देते थे। वे हमें जेल में डाल देते थे। हम ऐसे सत्ताधारियों के जुल्म सहकर यहां तक पहुंचे हैं। ये जो सदस्यता अभियान होगा, जो संगठन की संरचना होगी, इसी दौरान विधानसभाओं और लोकसभा में महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत आरक्षण लागू हो गया होगा। इस सदस्यता अभियान में मैं उन सभी लोगों को जोडूंगा, जो मेरी पार्टी के इतने महत्वपूर्ण निर्णय में अधिकतम महिलाओं को विजयी बनाकर सांसद, विधायक बना सकें।

देश में ऐसे-ऐसे इलाके हैं, जहां व्यवस्थाएं इतने सालों के बाद भी पहुंच नहीं पाई थीं। कई लोग जिन्होंने तीन-तीन, चार-चार पीढ़ी में घर नहीं देखा था, जिनका कोई अता-पता नहीं था, वे झुग्गी-झोपड़ी व फुटपाथ पर जिंदगी गुजारते थे। ऐसे 4 करोड़ परिवारों को हमने पता दिया है। और जब जिंदगी में घर का पता तय हो जाता है तो मंजिल का पता अपने आप बनने लगता है। मेरे सामने जो अभी 18 से 25 साल की उम्र का जवान है, वह मेरे 2047 के सपने को पूरा करने के लिए शक्ति का सबसे बड़ा स्रोत है। इसलिए युवाओं को विकसित भारत के लक्ष्य को पूरा करने के लिए जोड़ना है, नेशन फर्स्ट के विचार से जोड़ना है।

हम सिर्फ चुनावी मशीन नहीं हैं। हम वो खाद-पानी हैं, जो देशवासियों के सपनों को सींचा करते हैं। हम वो खाद-पानी हैं जो अपने आप को खपा कर देश के सपनों को संकल्प और संकल्प को सिद्धि तक ले जाने की यात्रा में अपने आप को डूबो देते हैं।

आरएसएस ने कहा- जाति जनगणना संवेदनशील मुद्दा

पलक्कड़। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने सोमवार को कहा कि जाति आधारित जनगणना लोगों के कल्याण के लिए सही है, लेकिन इसे चुनावों में राजनीतिक हथियार नहीं बनाया जाना चाहिए। सरकार को सिर्फ डेटा के लिए जातिगत जनगणना करवानी चाहिए। आरएसएस के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख सुनील आंबेकर ने कहा- हमारे हिंदू समाज में जाति बहुत संवेदनशील मुद्दा है। जनगणना हमारी राष्ट्रीय एकता और सुरक्षा के लिए अहम है। इसे बहुत गंभीरता के साथ किया जाना चाहिए। किसी जाति या समुदाय की भलाई के लिए भी सरकार को आंकड़ों की जरूरत होती है। ऐसा पहले भी हो चुका है, लेकिन इसे सिर्फ समाज की भलाई के लिए किया जाना चाहिए। इसे चुनावों का पॉलिटिकल टूल न बनाएं। केरल के पलक्कड़ में 31 अगस्त से चल रही तीन दिन की समन्वय बैठक के आखिरी दिन सुनील आंबेकर ने कोलकाता में ट्रेनी डॉक्टर से रेप-मर्डर, यूनिफॉर्म सिविल कोड और बांग्लादेश में हिंदुओं के हालात पर भी बात की। आंबेकर ने कहा- कोलकाता रेप-मर्डर को दुर्भाग्यपूर्ण घटना बताया। वे बोले- हर कोई इससे चिंतित है। देश में ऐसी घटनाएं बढ़ रही हैं। हमने सरकार की भूमिका, आधिकारिक तंत्र, कानून, सजा पर चर्चा की है। सभी का मानना है कि ऐसे मामलों पर दोबारा विचार करने की जरूरत है, ताकि हम फास्ट ट्रैक जैसी प्रोसेस अपना सकें और पीड़ित को न्याय दिला सकें। आंबेकर ने कहा- यूनिफॉर्म सिविल कोड मॉडल पहले से ही जनता के बीच है।

जम्मू में आतंकियों की फायरिंग से 1 जवान शहीद

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर के सुंजवान मिलिट्री स्टेशन पर सोमवार सुबह आतंकियों ने सेना पर फायरिंग की है। इसमें एक जवान शहीद हो गया है। सेना के अधिकारियों ने बताया कि आतंकियों ने मिलिट्री स्टेशन के बाहर से छिपकर स्नाइपर गन से गोलियां चलाई थीं। जवान के घायल होने के बाद उसे अस्पताल पहुंचाया गया। इलाज के दौरान उसने दम तोड़ दिया। सेना और पुलिस ने सर्च ऑपरेशन शुरू कर दिया है। ड्रोन से भी इलाके की निगरानी की जा रही है। जम्मू-कश्मीर के सांबा में सुरक्षाबलों ने 3 पिस्तौल और गोला-बारूद बरामद किया है। सुरक्षाबलों ने बताया कि ये हथियार ड्रोन से गिराए गए थे। बीएसएफ और पुलिस को अलर्ट पर रखा गया है। सर्च ऑपरेशन भी तेज कर दिया गया है। जम्मू-कश्मीर में 5 दिन में यह दूसरा हमला है। इससे पहले 29 अगस्त को कुपवाड़ा में एनकाउंटर में 3 आतंकी मारे गए थे। इनमें दो टेररिस्ट माछिल और एक तंगधार में मारा गया था। सेना ने बताया था कि माछिल और तंगधार में 28-29 अगस्त की देर रात खराब मौसम के बीच संदिग्ध गतिविधि देखी गई थी। इसके बाद यहां सेना और पुलिस ने सर्चिंग शुरू की।

हरियाणा में टिकट बंटवारे पर भाजपा ने मीटिंग बुलाई

चंडीगढ़। हरियाणा में टिकट बंटवारे के लिए दिल्ली में भाजपा की मीटिंग बुलाई गई है। यह मीटिंग राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा की अगुआई में होगी। मीटिंग में केंद्रीय मंत्री अमित शाह, हरियाणा प्रभारी धर्मेंद्र प्रधान, मुख्यमंत्री नायब सैनी, प्रदेश सह प्रभारी बिप्लब देब और केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल खट्टर भी शामिल होंगे। वहीं सोमवार दोपहर को पूर्व मंत्री देवेंद्र बबली ने भाजपा जॉइन कर ली है। दिल्ली में प्रदेश चुनाव सह प्रभारी बिप्लब देब ने उन्हें शामिल कराया। उनके साथ जेल अधीक्षक पद से इस्तीफा देने वाले सुनील सांगवान और जजपा के पूर्व जिला अध्यक्ष संजय कबलाना भी भाजपा में शामिल हो गए। बबली ने रविवार रात को जेजेपी से इस्तीफा दे दिया। पहले उनके कांग्रेस में जाने की चर्चा थी, लेकिन कांग्रेस प्रभारी दीपक बाबरिया ने कहा था कि देवेंद्र बबली ने उनसे मुलाकात की थी, लेकिन उन्हें टिकट के लिए मना कर दिया गया है। बबली लगातार कहते रहे हैं कि मई महीने में हुए लोकसभा चुनाव में उन्होंने सिरसा से जीती कांग्रेस की कुमारी सैलजा की मदद की थी। वहीं सरपंच एसोसिएशन ने भी बबली को कांग्रेस में शामिल करने पर विरोध की चेतावनी दी थी। जॉइनिंग के बाद देवेंद्र बबली ने कहा, मैं अपने आप को बहुत सौभाग्यशाली समझता हूं कि मुझे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में काम करने का मौका मिलेगा। मैं तो यही कह सकता हूं कि हम सब मिलकर हरियाणा में फिर से भाजपा की तीसरी बार सरकार बनाने जा रहे हैं। भाजपा उम्मीदवारों की लिस्ट आज भी जारी नहीं होगी। प्रदेश अध्यक्ष मोहन बड़ौली ने इसकी पुष्टि की। बड़ौली ने यह भी स्पष्ट किया कि लंबी लिस्ट तैयार हुई थी लेकिन अभी सबका सर्वे चल रहा है। उनके बारे में फीडबैक लिया जा रहा है।

शंभू बॉर्डर अभी नहीं खुलेगा

अमृतसर। हरियाणा-पंजाब का शंभू बॉर्डर अभी नहीं खुलेगा। सोमवार को इस मामले में सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई हुई। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि हम हाईपावर कमेटी गठित कर रहे हैं, लेकिन कोई मुद्दे तय नहीं कर रहे हैं। यह अधिकार कमेटी को दे रहे हैं। इस कमेटी में पंजाब और हरियाणा के अधिकारी भी शामिल हैं। हाईपावर कमेटी को आंदोलनकारी किसानों के बीच पहुंचकर अपने ट्रैक्टर हटाने का अनुरोध करना चाहिए। सुप्रीम कोर्ट ने यह भी नसीहत दी कि इस मामले का राजनीतिकरण न किया जाए। मुद्दे बहुत संवेदनशील होते हैं, इसलिए संतुलित रुख अपनाना चाहिए। पिछली 2 सुनवाई में सुप्रीम कोर्ट ने शंभू बॉर्डर को आंशिक तौर पर यानी एक लेन खोलने को कहा था। इस मामले में किसानों की पंजाब और हरियाणा के अधिकारियों से मीटिंग्स भी हुईं, जो बेनतीजा रहीं। हरियाणा पुलिस का कहना था कि किसान दिल्ली जाएं

सुप्रीम कोर्ट ने जाति जनगणना पर सुनवाई से इनकार किया

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार(2 सितंबर) को जाति जनगणना करवाने की मांग वाली एक याचिका पर सुनवाई करने से इनकार कर दिया। जस्टिस ऋषिकेश रॉय और जस्टिस एसवीएन भट्टी की बेंच ने याचिका खारिज करते हुए कहा कि जाति जनगणना एक नीतिगत मामला है। यह मुद्दा केंद्र सरकार के अधिकार क्षेत्र में आता है। इसलिए अदालत इसमें हस्तक्षेप नहीं कर सकते हैं। याचिकाकर्ता पी प्रसाद नायडू ने सुप्रीम कोर्ट से जाति जनगणना कराने के लिए केंद्र को निर्देश देने की मांग की थी। नायडू ने याचिका में कहा था कि केंद्र और उसकी एजेंसियों ने आज तक जनगणना-2021 के लिए गणना नहीं की है। शुरुआत में कोविड-19 महामारी और फिर कई बार स्थगित किया जा चुका है। जनगणना में देरी के कारण डेटा में बड़ा अंतर पैदा हो गया है। याचिकाकर्ता की ओर से पेश वकील रविशंकर जंडियाला ने कहा कि कई देशों ने जातिगत जनगणना की, लेकिन भारत ने अभी तक ऐसा नहीं किया है। 1992 के इंद्रा साहनी फैसले में कहा गया है कि यह जनगणना समय-समय पर की जानी चाहिए। इससे पहले राहुल गांधी ने 24 अगस्त को एक कार्यक्रम में जाति जनगणना का मुद्दा उठाया

था। उन्होंने कहा था- देश के कितने संस्थानों में दलितों-आदिवासियों की भागीदारी है। अगर उद्योगपतियों की लिस्ट निकालूं तो एक भी बड़े उद्योगपति 90त्न वाले लोगों में नहीं हैं। सिर्फ उद्योग में ही नहीं, कॉर्पोरेट, मीडिया, बैंकिंग सिस्टम में भी दलित नहीं है। कांग्रेस नेता ने अपने भाषण में कहा था- जाति जनगणना संविधान को मजबूत करने का काम है। इसको 10त्न ने नहीं बनाया। इसको 100त्न ने बनाया है। इसकी रक्षा आप लोग करते हो। अडाणी जी नहीं करते है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने 2 सितंबर को कहा कि जाति आधारित जनगणना लोगों के कल्याण के लिए सही है, लेकिन इसका इस्तेमाल चुनाव प्रचार के लिए नहीं किया जाना चाहिए। सरकार को सिर्फ डेटा के लिए जातिगत जनगणना करवानी चाहिए।

कोलकाता रेप-मर्डर केस, डॉक्टरों के प्रदर्शन का 24वां दिन

कोलकाता। कोलकाता रेप-मर्डर केस को लेकर लगातार 24वें दिन कोलकाता में राजनीतिक दलों और डॉक्टरों का विरोध प्रदर्शन जारी है। सोमवार (2 अगस्त) को अलग-अलग मेडिकल कॉलेजों के जूनियर डॉक्टरों ने कोलकाता पुलिस कमिश्नर विनीत गोयल के तत्काल इस्तीफे की मांग को लेकर विरोध प्रदर्शन किया। डॉक्टरों ने कोलकाता पुलिस हेडक्वार्टर तक रैली निकाली। डॉक्टरों का आरोप है कि आरजी कर केस की जांच के दौरान पुलिस ने ठोस कदम नहीं उठाए। आरजी कर में हुई तोड़फोड़ को रोकने में भी पुलिस नाकाम रही। वहीं, पुलिस ने इस रैली को रोकने बी बी गांगुली स्ट्रीट पर बैरिकेडिंग की। बीजेपी ने भी

सिलीगुड़ी और अलीपुरद्वार में आरजी की घटना के विरोध में प्रदर्शन किया।

बीजेपी कार्यकताओं ने अलीपुरद्वार में डीएम ऑफिस के बाहर विरोध प्रदर्शन किया। इस दौरान पुलिस और प्रशासन ने प्रदर्शनकारियों को रोकने के लिए बैरिकेडिंग की और उन पर वाटर कैनन का उपयोग किया। आरजी कर मेडिकल कॉलेज और अस्पताल में 8-9 अगस्त की रात 31 साल की ट्रेनी डॉक्टर का रेप-मर्डर हुआ था। 9 अगस्त की सुबह डॉक्टर की बॉडी मिली थी। इसके बाद से बंगाल में लगातार विरोध प्रदर्शन जारी है। टाइम्स ऑफ इंडिया की रिपोर्ट के मुताबिक, आरोपी संजय रॉय ने पॉलीग्राफ टेस्ट में सीबीआई को बताया कि 8 अगस्त की रात वह गलती से सेमिनार रूम में घुसा था। क्योंकि एक मरीज की हालत खराब थी। उसे ऑक्सीजन की जरूरत थी। इसलिए वो डॉक्टर को ढूंढ रहा था।

इसी दौरान थर्ड फ्लोर पर सेमिनार रूम में गया। वहां ट्रेनी डॉक्टर की बॉडी पड़ी थी। उसने शरीर को हिलाया, लेकिन कोई मूवमेंट नहीं हुआ। इससे वह घबरा गया और बाहर भागा। इस दौरान किसी चीज से टकराकर वह लड़खड़ाया और उसका ब्लूटूथ डिवाइस गिर गया। आरोपी ने दावा किया कि वह ट्रेनी डॉक्टर को पहले से नहीं जानता था।

संक्षिप्त समाचार

वॉन ने रुट को इंग्लैंड का एक महान बल्लेबाज बताया

लंदन। इंग्लैंड क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान माइकल वॉन ने बल्लेबाज जो रूट की जमकर प्रशंसा की है। वॉन ने कहा कि देश की और से सबसे अधिक 34 टेस्ट शतक लगाना आसान नहीं है। उन्होंने रुट का इंग्लैंड का एक महान बल्लेबाज करार दिया है। रूट ने लॉर्ड्स में श्रीलंका के खिलाफ दूसरे टेस्ट की दोनो पारियों में शतक लगाकर सबसे अधिक 33वां टेस्ट के दिग्गज एलिस्टर कुक के रिकार्ड को तोड़ दिया है। वॉन ने कहा, यह सब अचानक नहीं नहीं हुआ है। यह विशुद्ध तकनीक और क्षमता से जुड़ा हुआ मामला है। जो रूट महान हैं क्योंकि वह एक आदर्श खिलाड़ी हैं। वह एक अच्छे इंसान और बेहतरीन खिलाड़ी हैं। वॉन ने आसानी से रन बनाने के रूट के कौशल की सराहना करते हुए कहा, उसके खेलते समय विरोधी टीम को हमेशा ऑफ साइड पर स्क्वायर के पीछे चार फील्डर रखने पड़ते हैं क्योंकि वह इस क्षेत्र में बहुत अच्छे हैं।वह सामान्य रूप से खेलता है और बिना कोई जोखिम लिए रन बनाता है। आप कितनी बार देखते हैं कि उसने बिना बड़े शॉट लगाये रन बना लिए हैं। रूट ने 10 देशों के खिलाफ शतक बनाया है पर अभी तक ऑस्ट्रेलिया में शतक नहीं बनाया है। इसपर वॉन ने कहा, उनके खेल में केवल एक चीज की कमी है, वह है ऑस्ट्रेलिया में उनका बड़ा शतक पर मुझे उम्मीद है कि इस बार वह एशेज में शतक की कमी भी पूरी कर देगा। वहीं पूर्व कप्तान टिम कुक ने भी रूट की असाधारण स्थिरता और तकनीक की प्रशंसा करते हुए कहा, उनके बारे में यह अनिवार्यता है कि जब वह मैदान पर उतरते हैं तो रन बनाएंगे और इसे इतना आसान बना देंगे।

5 सितंबर को केबीसी में नजर आयेंगे मनु और अमन

मुम्बई। पेरिस ओलंपिक में कांस्य पदक विजेता निशानेबाज मनु भाकर और पहलवान अमन सहरावत अब बॉलीवुड महानायक अमिताभ बच्चन के गेम शो कौन बनेगा करोड़पति (केबीसी) में नजर आयेंगे। ये दोनो ही केबीसी के 16वें सीजन में दिखाई देंगे। कौन बनेगा करोड़पति 16 के निर्माताओं ने अपने ताजा प्रोमो में ये घोषणा की है। इसमें कहा गया है कि मनु भाकर और अमन के ओलंपिक पदक जीतने के लिए उन्हें सम्मानित किया जाएगा। 5 सितंबर को प्रसारित होने वाले विशेष एपिसोड में प्रशंसका मनु और अमन को देख सकेंगे। इसी को लेकर सोनी टीवी के सोशल मीडिया हैंडल पर मनु और अमन का एक वीडियो भी साझा किया गया है। इसमें कहा गया है कि विश्व में विजय ध्वज लहराने वाले,ओलंपिक पदक विजेता मनु भाकर और अमन सहरावत आ रहे हैं केबीसी में। कौन बनेगा करोड़पति, 05 सितंबर, रात 9 बजे सोनी एंटरटेनमेंट टेलीविजन पर दिखेंगा। साथ ही इस वीडियो में मनु और अमन के साथ केबीसी 16 के मंच पर होने वाले जश्न की एक झलक भी दिखेगी।

हीरो स्प्लेंडर ने अग्रणी बाइक का खिताब बरकरार रखा

नई दिल्ली। हीरो स्प्लेंडर ने बाजार की अग्रणी मोटरसाइकल का खिताब बरकरार रखा हुआ है। जैटो डायनमिक्स के आंकड़ों के अनुसार इस साल की जनवरी से जुलाई की अवधि में पल्सर की थोक बिक्री पिछले साल की तुलना में 47.5 प्रतिशत की दर से बढ़कर 8,42,693 हो गई। अलबत्ता शाइन ने इस वृद्धि को पीछे छोड़ते हुए इस साल इसी अवधि के दौरान पिछले साल के मुकाबले 115.3 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज करते हुए 10.47 लाख का आंकड़ा छू लिया । जैटो डायनमिक्स इंडिया के अध्यक्ष रवि भाटिया ने शाइन की इस तीव्र वृद्धि का श्रेय होंडा की विवेकपूर्ण वाहन रणनीति को दिया है। भाटिया ने बताया, 'शुरुआत में शाइन ने केवल 125सीसी संस्करण पेश किया था जो पल्सर 125सीसी के साथ प्रतिस्पर्धा कर रहा था। मई 2023 में होंडा ने शाइन का 100सीसी संस्करण पेश किया, जिससे उसने एक ही मॉडल के साथ बाजार की 100सीसी और 125सीसी दोनों श्रेणियों को कवर कर लिया। नए संस्करण ने शाइन की बिक्री संख्या को काफी बढ़ा दिया।' इसके विपरीत पल्सर ज्यादा व्यापक रेंज प्रदान करता है। उसके इंजन की सात क्षमताएं (125, 150, 160, 200, 220, 250, 400 सीसी) और संस्करण हैं। भाटिया ने कहा, 'अलबत्ता यह व्यापक रेंज शाइन की ज्यादा बिक्री वाली 100-125 सीसी श्रेणी पर केंद्रित दृष्टिकोण से मेल नहीं खा सकी।' होंडा मोटरसाइकिल ऐंड स्कूटर इंडिया के निदेशक (बिक्री एवं मार्केटिंग) योगेश माथुर ने बताया कि कंपनी ने 125सीसी और उससे ऊपर वाली श्रेणी में दोपहिया वाहनों की बढ़ती मांग के बीच पिछले साल के मुकाबले इस साल ग्रामीण बाजार में ज्यादा वृद्धि का अनुभव किया है। उन्होंने कहा, 'हमें अपने सबसे ज्यादा बिकने वाले मॉडल शाइन और यूनिकॉर्न के लिए उपभोक्ताओं की शानदार तरजीह दिख रही है और इन मॉडलों को उनकी मूल्य पेशकश, आधुनिक खूबियों और आराम के लिए बढ़िया प्रतिक्रिया मिल रही है।' इस साल जनवरी से जुलाई के बीच यूनिकॉर्न की बिक्री पिछले साल की तुलना में 117.6 प्रतिशत बढ़कर 1,63,090 हो गई जिससे यह देश में मोटरसाइकल का नौवां सबसे ज्यादा बिकने वाला मॉडल बन गई। भाटिया ने कहा कि यूनिकॉर्न देश में होंडा की पहली ऐसी प्रतिष्ठा प्राप्त बाइक है जिसे अपनी विश्वसनीयता, आराम और ईंधन के लिहाज से दक्ष माना जाता है। बजाज प्लेटिना पिछले साल पांचवें स्थान पर थी। उसने इस साल के पहले सात महीनों में अपनी थोक बिक्री में पिछले साल के मुकाबले केवल एक प्रतिशत का इजाफा देखा और बिक्री 2,29,604 के आंकड़े पर पहुंच सकी। लिहाजा, प्लेटिना गिरकर 7वें स्थान पर आ गई जबकि टीवीएस मोटर की राइडर और अपाचे जोरदार बढ़ोतरी के बल पर 5वें और 6ठे स्थान पर पहुंच गई।

भारत में टीवीएस जुपीटर 110 स्कूटर लॉन्च

नईदिल्ली। हाल ही में भारत में 2024 टीवीएस जुपीटर110 स्कूटर लॉन्च किया गया है। 2024 टीवीएस जुपीटर 110 स्कूटर शोरूम पर पहुंचना शुरू हो गया है। कंपनी जल्द ही इसकी डिलीवरी शुरू करेगी। इसकी शुरुआती कीमत 73,700 रुपए एक्स-शोरूम है। यह स्कूटर 4 वेरिएंट- ड्रम, ड्रम अलॉय, ड्रम स्मार्टएक्सोनेट और डिस्क स्मार्टएक्सोनेट में उपलब्ध है।2024 टीवीएस जुपीटर 110 के फ्रंट में 220 मिमी डिस्क ब्रेक, रियर में 130 मिमी ड्रम ब्रेक, इनफिनिटी एलईडी लैंप, एलईडी लाइट्स, डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर, टर्न बाय टर्न नेविगेशन, ब्लूटूथ कनेक्टिविटी, फाइंड माई व्हीकल, डिस्टेंस टू एंपटी, एवरेज फ्यूल इकोनॉमी, वॉयस असिस्ट, मोबाइल चार्जिंग के लिए यूएसबी पोर्ट, 33 लीटर अंडरसीट स्टोरेज, वॉयस असिस्ट, हजार्ड लाइट्स, फ्रंट फ्यूल फिलिंग, पियानो ब्लैक फिनिश, मेटल मैक्स बॉडी, डबल हेलमेट रखने की जगह, टर्न सिग्नल लैंप रीसेट, फॉलो मी हेडलैंप, दो लीटर का ग्लोव बॉक्स, बैग हुक, आईएसएस और आईजीओ असिस्ट जैसे फीचर्स दिए गए हैं। इस स्कूटर में 113सीसी इंजन दिया गया है, जो 8एचपी की पावर और 9.8 एनएम का टॉर्क जनरेट करता है। इसमें पावर आउटपुट में करीब 0.1एचपी की वृद्धि की गई है। यह स्कूटर पहली बार आईजीओ असिस्ट माइक्रो-हाइब्रिड तकनीक से लैस है। इस तकनीक में एक खास तरह की पावरफुल बैटरी शामिल है, जो स्कूटर के धीमे होने पर इंजन द्वारा चार्ज होती है। यह बैटरी आईएसजी मोटर को पावर देती है, जिससे स्कूटर की प्रदर्शन क्षमता में सुधार होता है।

गंभीर ने अपनी पसंदीदा टीम में रोहित, बूमराह को शामिल नहीं किया

विराट , सचिन , सहवाग व द्रविड़ को मिली जगह

मुम्बई। भारतीय क्रिकेट टीम के मुख्य कोच गौतम गंभीर ने अपनी पसंदीदा अंतिम ग्यारह टीम घोषित की है। हैरानी की बात ये है कि गंभीर ने इसमें रोहित शर्मा और तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह को शामिल नहीं किया है। टीम में विराट कोहली के अलावा पूर्व बल्लेबाज वीरेन्द्र सहवाग , सचिन तेंदुलकर और पूर्व मुख्य कोच राहुल द्रविड़ भी शामिल किया गया है। गंभीर ने इसमें पारी की शुरुआत के लिए वीरेंद्र सहवाग के साथ स्वयं अपने को रखा है। विराट इसमें 5वें नंबर पर बल्लेबाजी करेंगे। गंभीर को हमेशा ही लीक से हटकर चलने के लिए जाना जाता है। उनकी खूबी है कि है कि वो जो भी करते हैं दिल से करते हैं और जो सोचते हैं वो बिना किसी डर के साफ बोल देते हैं। ऐसा ही उनकी इस टीम को देखकर भी अंदाज होता है। इसमें विराट कोहली को तो जगह मिली लेकिन रोहित बाहर रह गये। गंभीर ने इस टीम में अनिल कुंबले और आर अश्विन जैसे दो स्पिनर हैं जबकि तेज गेंदबाजी के लिए जहीर खान और ऑलराउंडर इरफान पठान को रखा है। भी ऑल टाइम इलेवन में नहीं हैं। गंभीर का एक वीडियो भी आया है। इसमें उनको जब अपनी पसंदीदा टीम का चयन करने को कहते हैं तो वह अंतिम ग्यारह में सहवाग के साथ स्वयं ओपनर के तौर पर रखा है। गंभीर ने कहा, मैं और सहवाग बतौर सलामी बल्लेबाज टीम में होंगे। द्रविड़, सचिन चौथे नंबर पर जबकि विराट कोहली 5वें स्थान पर उतरेंगे। युवराज सिंह छठे और महेंद्र सिंह धोनी सातवें नंबर पर उतरेंगे।

अनिल कुंबले 8, आर अश्विन 9वें नंबर पर, इरफान पठान को मैं 10वें स्थान पर रखना चाहूंगा और जहीर खान अंत में उतरेंगे। गौतम गंभीर की ऑल टाइम इंडिया इलेवन टीम-गौतम गंभीर, वीरेंद्र सहवाग, राहुल द्रविड़, सचिन तेंदुलकर, विराट कोहली, युवराज सिंह, महेंद्र सिंह धोनी (विकेटकीपर), अनिल कुंबले, आर अश्विन, इरफान पठान और जहीर खान।

भारत के निषाद कुमार ने पैरालंपिक खेलों में रजत जीता

पेरिस। भारत के पैरा एथलीट निषाद कुमार ने पेरिस पैरालंपिक खेलों में रजत पदक जीता है। निषाद ने पुरुषों की टी47 ऊंची कूद स्पर्धा में दूसरा स्थान हासिल करते हुए ये पदक जीता है। इसी के साथ ही पेरिस पैरालंपिक में एक स्वर्ण, दो रजत और तीन कांस्य के साथ भारत के कुल पदकों की तादद सात हो गयी। रविवार देर रात हुए मुकाबले में निषाद ने पुरुषों की टी47 ऊंची कूद स्पर्धा में अपनी 2.04 मीटर की छलांग के साथ ही पेरिस पैरालंपिक खेलों का रजत पदक अपने नाम किया। वहीं अमेरिका के रॉडरिक टाउनसेंड-रॉबर्ट्स ने 2.08 मीटर की छलांग लगाकर स्वर्ण पदक जीता। जबकि रूस के जॉर्जी मार्गिएव ने कांस्य पदक हासिल किया। वहीं भारत की ही प्रीती पाल ने पैरा ओलंपिक्स में दूसरा कांस्य पदक जीता है। प्रीति ने पैरालंपिक की अलग-अलग स्पर्धाओं में ये पदक जीते हैं। प्रीती ने दो सौ मीटर टी-35 इवेंट में कांस्य पदक जीता है। इससे पहले उन्होंने दो सौ मीटर टी-35 इवेंट में भी एक कांस्य जीता था।

गंभीर को पता है कब या करना है : जोंटी रोड्स

जोहांसबर्ग। दक्षिण अफ्रीका के पूर्व क्रिकेटर जोंटी रोड्स ने भारतीय क्रिकेट टीम के मुख्य कोच गौतम गंभीर की जमकर प्रशंसा करते हुए कहा है कि उन्हें पता है कि कब क्या करना है ,ऐसें में उनके मार्गदर्शन में भारतीय टीम का प्रदर्शन और भी बेहतर होगा। रोड्स के अनुयार गंभीर का स्वभाव ऐसा है कि वह किसी भी टीम पर तत्काल उनका प्रभाव दिखने लगता है। रोड्स ने कहा, 'गंभीर जहां भी जाते हैं अपने आक्रामक रवैये से अपना प्रभाव छोड़ते हैं। हमने देखा है कि जब वह लखनऊ सुपर जायंट्स को छोड़कर कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) से जुड़े तो उन्होंने किस तरह से तत्का प्रभाव छोड़ा। उनके पहुंचने के बाद केकेआर के खेलने का अंदाज बदल गया और वह आईपीएल जीत गयी। इस पूर्व दक्षिण अफ्रीकी क्रिकेटर ने कहा, 'वह बेहद व्यवहार कुशल व्यक्ति हैं और जानते हैं कि उन्हें कब क्या करना है। वह हमेशा अपने मन की सुनते हैं। गंभीर अपने काम में कभी कोई कसर नहीं छोड़ते और उनके रहते हुए भारतीय टीम पहले से और ज्यादा मजबूत होगी। रोड्स आजकल लखनऊ सुपरजायंटस टीम के फील्डिंग कोच हैं और उन्होंने 2025 सत्र के लिए मेंटर के रूप में पूर्व तेज गेंदबाज जहीर खान की नियुक्ति को सराहा है। उन्होंने कहा, 'आईपीएल जैसे टूर्नामेंट में आपको शांत दिमाग वाले लोगों की सबसे ज्यादा आवश्यकता रहती है। अगर भावनाएं आप पर हावी होने लगती हैं तो इसका असर मैदान पर मौजूद हर खेल रहे हर खिलाड़ी पर पड़ता है। ऐसी परिस्थितियों में जहीर जैसे अनुभवी के होने से लाभ होगा। उन्होंने कहा कि युवा बल्लेबाज आयुष बडोनी दक्षिण अफ्रीका के पूर्व बल्लेबाज बल्लेबाज हर्शल गिब्स की तरह खेलता है। बडोनी ने दिल्ली प्रीमियर लीग के एक मैच में 19 छक्के लगाकर नया रिकॉर्ड बनाया। रोड्स ने कहा, 'वह मुझे कुछ हद तक हर्शल गिब्स की याद दिलाता है। वह हर प्रकार से खेल सकता है और उसके पास तेज शॉट लगाने की जबरदस्त क्षमता है।

उतार-चढ़ाव के बीच भारतीय शेयर बाज़ार में रही तेज़ी

सेंसेक्स 222 अंक चढ़ा, निटी 25,300 के स्तर पर

मुंबई। भारतीय बेंचमार्क इंडेक्स बीएसई सेंसेक्स और निफ्टी 50 की शुरुआत सप्ताह के पहले कारोबारी ?दिन सोमवार को पॉजिटिव रुख के साथ हुई। शुरुआती कारोबार में 30 शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स 222 अंक की बढ़त के साथ 82,58.53 पर कारोबार कर रहा था, जबकि निफ्टी 50 97.70 अंक की बढ़त के साथ 25,333.60 पर था। सोमवार को घरेलू बाजार में निवेशकों की नजर अगस्त महीने के एचएसबीसी मैन्युफैक्चरिंग पीएमआई के आंकड़ों, ऑटो बिक्री के आंकड़ों और मार्केट रेगुलेटर सेबी द्वारा एफएंडओ एंट्री और एग्जिट विनियमों में किए गए संशोधनों पर होगी। पिछले कारोबारी सत्र शुक्रवार को घरेलू शेयर बाजार शानदार तेजी के साथ बंद हुआ था। इंट्रा डे ट्रेड में लगातार तीसरे दिन निफ्टी ने रिकॉर्ड हाई दर्ज किया तो सेंसेक्स भी पीछे नहीं रहा। 30 शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स लगातार दूसरे दिन रिकॉर्ड हाई लेवल पर पहुंचा। शुक्रवार को लगातार 12वें दिन निफ्टी-50 बढ़त दर्ज करते हुए 25,235.90 के लेवल पर बंद हुआ था। वहीं एसएंडपी बीएसई सेंसेक्स 231.16 अंकों की बढ़त के साथ लगातार नौवें दिन हरे निशान में बंद हुआ था। सेंसेक्स 82,365.77 के लेवल पर बंद हुआ। वहीं अमेरिकी बाजारों में डॉव 0.55 प्रतिशत की बढ़त के साथ लगातार दूसरे ऑलटाइम हाई पर बंद हुआ। एसएंडपी 500 1.01 फीसदी चढ़ा, जबकि नैस्डैक कंपोजिट 1.13 फीसदी चढ़ा। एशियाई बाजार मिलाजुला कारोबार कर रहे हैं। जापान का निक्की 0.66 प्रतिशत ऊपर और एएसएक्स 200 0.41 प्रतिशत नीचे कारोबार कर रहे थे। इस बीच हैंग सेंग अपरिवर्तित रहा और शंघाई 0.14 प्रतिशत नीचे रहा।

पाक में सुरक्षा के पूरे इंतजाम होने पर ही भारतीय टीम को चैंपियंस ट्रॉफी के लिए भेजें : हरभजन

मुम्बई। भारतीय टीम के दिग्गज स्पिनर हरभजन सिंह ने कहा है कि चैंपियंस ट्रॉफी के भातरीय टीम को तभी पाकिस्तान भेजा जाना चाहिये जब सरकार को लगे कि सुरक्षा सही है। इसमें किसी भी प्रकार की कमी होने पर टीम को भेजना सही नहीं होगा। हरभजन ने कहा कि एक क्रिकेटर के तौर पर में खेलने के पक्ष में हूं पर सुरक्षा सबसे अहम है। इसके साथ ही ये मामला क्रिकेट ही नहीं उससे आगे का है। वहीं इससे पहले पूर्व पाकिस्तानी स्पिनर दानिश कनेरिया ने कहा था कि पाक में सुरक्षा के हालात बेहद ख़राब हैं और ऐसे में किसी भी हालात में भारतीय टीम को वहां नहीं जाना चाहिये। हरभजन ने कहा कि पाकिस्तान अगर पूरी तरह से सुरक्षा करता है तभी टीम को भेजने पर विचार किया जा सकता है। वहीं हरभजन ने कहा, पाक में सुरक्षा को लेकर चिंता हमेशा ही रही है। अगर खिलाड़ियों की सुरक्षा वहां पर नहीं होगी तो मुझे नहीं लगता है कि भारतीय टीम को जाना चाहिए। अगर वो कहते हैं कि टीम को पूरी तरह से सुरक्षा दी जाएगी और किसी तरह की कोई दिक्कत नहीं होगी। तो फिर इस बार में सरकार को विचार कर अपनी ओर से फैसला करना चाहिये क्योंकि यह सिर्फ क्रिकेट तक ही सीमित नहीं है ये उससे आगे बढ़कर कहीं ज्यादा है। उन्होंने साथ ही कहा, जहां तक एक क्रिकेटर के तौर पर मैं यही कहना चाहूंगा, आपको क्रिकेट खेलना है वो खेलिए लेकिन वहीं पर सुरक्षा एक मुद्दा तो है। हमारे खिलाड़ियों को तब तक वहां नहीं जाना चाहिए तब तक हमें यह ना लगे ही हां सुरक्षा बिल्कुल पक्की है।

महेन्द्र सिंह धोनी ने विराट कोहली को सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों में से एक बताया

मुम्बई। भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान महेंद्र सिंह धोनी ने बल्लेबाज विराट कोहली की जमकर प्रशंसा करते हुए उन्हे विश्व क्रिकेट के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों में से एक बताया है। धोनी की कप्तानी में विराट ने लंबे समय तक खेला था और उनके संन्यास के बाद कप्तानी भी बने थे। विराट 35 साल की उम्र में भी अपने जबरदस्त प्रदर्शन और फिटनेस के कारण विश्व स्तर पर छाये हुए हैं। हाल ही में एक कार्यक्रम में धोनी ने विराट की जमकर प्रशंस की। इसका एक वीडियो भी सोशल मीडिया पर आया है। इसमें धोनी ने हंसते हुए कहा, हम 2008 या 09 से खेल रहे हैं जबकि दोनो की उम्र में अंतर है। इसलिए मुझे नहीं पता कि मैं खुद को बड़ा भाई या सहकर्मी या जो भी नाम दूं, कहूं। उन्होंने कहा, पर आखिरकार, हम सहकर्मी रहे हैं, आप जानते हैं जिन्होंने बहुत लंबे समय तक भारत के लिए खेला है। जब विश्व क्रिकेट की बात आती है तो वह सर्वश्रेष्ठ में से एक हैं। विराट अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से आकल दूर हैं, की टी20 विश्व कप जीत के बाद कोहली श्रीलंका के खिलाफ टेस्ट सीरीज में शामिल हुए थे। वह वर्तमान में लंदन में हैं, परिवार के साथ समय बिता रहे हैं और उनके बांग्लादेश के खिलाफ घरेलू टेस्ट में खेलते हुए दिखने की संभावना है। वहीं गत वर्ष सीएसके की कप्तानी छोड़ने वाले धोनी के भी आईपीएल 2025 के सत्र में खेलने की संभावनाएं जतायी जा रही हैं।

सरकार लाएगी रिपेयर इंडेक्स, दिसंबर तक होगा लांच

नई दिल्ली। जल्द ही आपको टीवी या मोबाइल खरीदते वक्त पता चल जाएगा कि आप जो इलेक्ट्रॉनिक आइटम खरीद रहे हैं वह खराब होने पर आसानी से दोबारा रिपेयर हो जाएगी या आपको उसे ठीक कराने में काफी पापड़ बेलने पड़ेंगे। इसके लिए सरकार रिपेयर इंडेक्स लाएगी। यह इंडेक्स इस साल दिसंबर तक लॉन्च हो जाएगा। इलेक्ट्रॉनिक उत्पादों के रिपेयर सूचकांक से बढ़ती ई-कचरे की समस्या का समाधान होगा और निर्माताओं को अधिक आसानी से मरम्मत योग्य उत्पाद बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकेगा। केंद्रीय उपभोक्ता मामलों का मंत्रालय इसे बनाएगा। उपभोक्ताओं को यह जानकारी देने के लिए प्रमुख मापदंडों पर स्कोर प्रदान करेगा कि किसी उत्पाद की मरम्मत कितनी आसानी से की जा सकती है। एक कार्यशाला को संबोधित करते हुए, उपभोक्ता मामलों की सचिव निधि खरे ने मंत्रालय के रिपेयर इंडेक्स बनाने की योजना की जानकारी दी। प्रस्तावित सूचकांक अन्य देशों के रिपेयर इंडेक्सेस के अध्ययन के बाद बनाया जा रहा है। फ्रांस का रिपेयर इंडेक्स पांच मानको पर आधारित होता है। यह तकनीकी दस्तावेजों की उपलब्धता, डिसएसेंबली में आसानी, स्पेयर पार्ट्स की उपलब्धता और कीमत जैसे मानदंडों पर उत्पादों को रेटिंग देता है। भारतीय रिपेयर इंडेक्स भी किसी भी उत्पाद को पांच में से कोई एक रेटिंग देगा। गौरतलब है कि सरकार ने पहले ही एक राइट टू रिपेयर पोर्टल लॉन्च कर दिया है, जिसमें 63 कंपनियां शामिल हैं। भारत, चीन और अमेरिका के बाद दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा इलेक्ट्रॉनिक कचरा उत्पादक है। एचसीएल टेक्नोलॉजीज के संस्थापक अजय चौधरी ने कार्यशाला में कहा कि आज, अधिकांश उत्पाद मरम्मत योग्य नहीं हैं।

हमें ऐसे उत्पाद डिजाइन करने की आवश्यकता है जिन्हें मरम्मत किया जा सके। जब तक हम कानून नहीं बनाते, चीजें नहीं बदलेंगी। इसलिए इस दिशा में कानून बनाने की जरूरत है। मालूम हो कि आजकल बाजार में बिक रहे टीवी-मोबाइल जैसे इलेक्ट्रॉनिक उत्पादों के साथ सबसे बड़ी दिक्कत इनकी रिपेयरिंग है। खराब होने पर इनकी मरम्मत आसानी से नहीं होती। कुछ के ओरिजिनल पार्ट्स नहीं मिलते और मजबूरी में घटिया कलपुर्जे डलवाकर काम चलाना पड़ता है।

मैहर पहुंचीं प्रभारी मंत्री ने की कामकाज की समीक्षा

शासन की प्राथमिकताएं गिनाईं, अफसरों से कहा- जनता को दिलाएं योजनाओं का लाभ

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। मध्यप्रदेश शासन की पंचायत एवं ग्रामीण विकास राज्यमंत्री और मैहर जिले की प्रभारी मंत्री राधा सिंह ने रविवार को मैहर पहुंच कर शासकीय कामकाज और योजनाओं की समीक्षा की। उन्होंने शासन की प्राथमिकताएं गिनाईं और विभागीय अधिकारियों को उनका क्रियान्वयन कर जनता को लाभान्वित कराने तथा सरकार की मंशा पूर्ण करने के निर्देश दिए।

इस मौके पर सांसद गणेश सिंह, विधायक श्रीकांत चतुर्वेदी, जिला पंचायत अध्यक्ष रामखेलावन कोल, नगर पालिका अध्यक्ष गीता संतोष सोनी, जनपद पंचायत अध्यक्ष अमरपाटन माया विनीत पाण्डेय, जिलाध्यक्ष कमलेश सुहाने, पूर्व मंत्री रामखेलावन पटेल, जिला पंचायत के वन समिति के सभापति हरीशकांत त्रिपाठी, कलेक्टर रानी बाटड़, पुलिस अधीक्षक सुधीर अग्रवाल, सीईओ जिला पंचायत संजना जैन सहित अन्य जनप्रतिनिधि तथा विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे।

प्रभारी मंत्री राधा सिंह ने मैहर जिले में प्रशासनिक व्यवस्था, विभागीय आधारभूत संरचनायें और शासकीय विभागों के योजनाओं के लक्ष्य और पूर्ति की जानकारी लेकर समीक्षा करते हुए कहा कि शिक्षा और स्वास्थ्य के विषय राज्य शासन की प्राथमिकता के कार्य हैं। आवश्यक अधोसंरचना का कार्य गुणवत्ता के साथ पूर्ण करते हुए विभागीय कार्यों में उत्तरोत्तर प्रगति लायें। ग्रामीण विकास कार्यों की समीक्षा करते हुए प्रभारी मंत्री ने कहा कि सडकों पर विचरण करने वाले गौ-वंशीय पशुओं को गौ-शालाओं में भेजकर उनके भरण-पोषण की व्यवस्था करें।

इसी प्रकार दुर्घटना में घायल गौ-वंशीय पशुओं के उपचार की व्यवस्था और मृत पशुओं का उचित रूप से निस्तारण सुनिश्चित करें। आजीविका मिशन के स्व-सहायता समूहों की गतिविधियों की समीक्षा करते हुए उन्होंने कहा कि मैहर जिले में स्व-सहायता समूहों की दीदीयों के प्रशिक्षण के लिए जिला मुख्यालय पर प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित करने का प्रस्ताव भेजे।

प्रभारी मंत्री ने कहा कि बालक और बालिकाओं के स्कूलों तथा कॉलेजों में टायलेट और पेयजल की सुनिश्चित व्यवस्था रहे। साथ ही मरम्मत योग्य स्कूल भवनों का सुधार तथा बालिका स्कूलों में शौचालय निर्माण के लिए ग्रामीण यांत्रिकी सेवा की भी तकनीकी मदद ली जा सकती है। इस दौरान सतना सांसद गणेश सिंह ने निराश्रित मवेशियों के सम्बन्ध में मैहर जिले में किये जा रहे नवाचार की प्रशंसा करते हुए इसमें ग्रामीणों को जोड़ने को कहा।

स्वास्थ्य विभाग की समीक्षा में सांसद गणेश सिंह ने कहा कि मैहर जिले में बडी संख्या में स्वास्थ्य संस्थाओं के भवनों के लिए राशि स्वीकृत की गई है। जिनमें विभाग द्वारा अधिकांश कार्य शुरू नहीं किये गये हैं। उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य संस्थाओं के निर्माण में तेजी लायें। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि विभागीय योजनाओं में मैहर जिले का भाग अलग से प्रस्तुत करें।

जल जीवन मिशन के कार्यों की समीक्षा में सांसद ने कहा कि मैहर जिले के रामनगर में बाण सागर सामूहिक जल प्रदाय योजना पूरे सतना और मैहर जिले के लिए संचालित की जा रही है। हर घर नल से जल की इस योजना में कार्यकारी एजेंसी एलएनटी आगामी 10 साल तक मेंटेनेस का कार्य भी करेंगी। उन्होंने कहा कि योजना में पर्याप्त गति लाकर महत्वाकांक्षी योजना को शीघ्र फलीभूत करें।

कलेक्टर मैहर रानी बाटड ने राजस्व महाअभियान 2.0 की जानकारी में बताया कि 31 अगस्त को समाप्त हुए इस अभियान में नामांतरण, बंटवारा, अभिलेख दुरुस्ती में शत-प्रतिशत कार्य हुआ है। ई-केवायसी और नक्शा तरमीम में कुछ कार्य शेष हैं। राजस्व महाअभियान 2.0 में रीवा संभाग के मैहर, सतना और मऊगंज की रैंक सबसे ऊपर है।

सीईओ जिला पंचायत संजना जैन ने ग्रामीण विकास की समीक्षा में बताया कि मैहर जिले में इस साल मनरेगा लेवर बजट का लक्ष्य 9 लाख 61 हजार 708 मानव दिवस का रखा गया है। जिसमें शुरू के 5 महीने में 4 लाख 53 हजार 611 मानव दिवस अर्जित कर 46 प्रतिशत उपलब्धि अर्जित कर ली गई है। मैहर जिले के तीन विकासखंडों में 45 गो-शाला निर्माण की गई है। जिनमें 5200 गौ-वंशीय पशु रखे गए हैं। इसके अलावा बडी तादाद में निराश्रित गौ-वंशीय पशुओं को रखने के लिए गोचर भूमि और जल संरचनाओं के निकट 44 अस्थायी बाडे बनाये गये हैं। जिनमें 1034 गौ-वंशीय पशु अब तक रखे गये हैं। इन पशुओं की देखरेख के लिए ग्राम पंचायतों द्वारा 62 व्यक्तियों को हकारे के रूप में रखा गया है। स्वच्छ भारत मिशन में व्यक्तिगत शौचालय निर्माण के लिए छूट गये परिवारों से आवेदन आनलाइन लि जा रहे हैं।

प्रधानमंत्री पोषण शक्ति योजना में मैहर जिले की 1231 शालाओं के 70858 बच्चों को 685 स्व-सहायता समूहों के माध्यम से मध्यान्ह भोजन का लाभ दिया जा रहा है। प्रधानमंत्री आवास योजना में 47306 आवास लक्ष्य स्वीकृत के विरूद्ध 45167 आवास पूर्ण कर लिये गये है, जो कि 95.48 प्रतिशत की उपलब्धि है।प्रधानमंत्री जन मन योजना की समीक्षा में बताया गया कि मैहर जिले के दो पंचायतों में कुल 12 बैगा विशेष जनजाति के परिवार है। जिनकी सदस्य संख्या 53 है। सभी परिवार के सदस्यों को शासकीय योजनाओं से शत-प्रतिशत रूप से लाभांवित किया जा चुका है।

सार्वजनिक वितरण प्रणाली की समीक्षा में बताया गया कि मैहर जिले में अगस्त माह का 92.6 प्रतिशत खाद्यान्न वितरण कर लिया गया है। मुख्यमंत्री अन्नदूत योजना के अंतर्गत खाद्यान्न परिवहन के लिए अतिरिक्त वाहन लगाने की स्वीकृत प्राप्त हो गई है। बैठक में महिला बाल विकास, आदिम जाति कल्याण विभाग, स्वास्थ्य, आजीविका, जल जीवन मिशन, डीएमएफ मद के कार्यों की समीक्षा भी की गई।

रिश्ते के भाई ने घर में घुस कर की दरिंदगी, शिकायत थाना पहुंचते ही हो गया फरार

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। सतना रिश्तों को शर्मसार कर नाबालिग लड़की के साथ दरिंदगी का एक और मामला सामने आया है। पुलिस ने शिकायत दर्ज कर आरोपी की तलाश शुरू कर दी है।

जानकारी के मुताबिक, सतना जिले के जैतवारा थाना क्षेत्र में दलित परिवार की एक 17 वर्षीय नाबालिग लड़की हैवानियत का शिकार बनी है। उसके साथ यह घिनौनी हरकत करने वाला कोई और नहीं बल्कि रिश्ते में चचेरा भाई लगने वाला उसके बड़े पिता का बेटा ही है।

पुलिस सूत्रों ने बताया कि घटना शुक्रवार 30 अगस्त की दोपहर की है। पीड़िता और आरोपी एक ही परिवार के हैं लिहाजा उनके घर भी आसपास ही हैं। दोनों के परिजन मेहनत-मजदूरी कर के परिवार पालन करते हैं। दोनों के परिवार के सदस्य रोजाना की तरह काम पर चले गए थे। पीड़िता और आरोपी अपने घरों में अकेले थे। तभी आरोपी निकल कर पीड़िता के घर आया। दोनों के बीच आपस मे भाई-बहन के रिश्ते थे और घर पर आना-जाना बना रहता था लिहाजा पीड़िता ने इसे सामान्यतया लिया। लेकिन आरोपी ने सूनेपन का बेजा फायदा उठाते हुए दरिंदगी की।

घटना के बाद पीड़िता डरी-सहमी रही, लिहाजा उसने किसी से कुछ नहीं कहा। लेकिन रविवार को उसने अपनी मां को आपबीती सुनाई। जिसके बाद जैतवारा थाना में शिकायत दर्ज कराई गई। पुलिस ने पीड़िता का मेडिकल करा कर प्रकरण दर्ज कर लिया है।

पुलिस सूत्रों ने बताया कि जिस वक्त मामला थाना पहुंचा, उस वक्त आरोपी कहीं गया हुआ था। उसे शिकायत दर्ज होने की भनक लगी तो वह फरार हो गया। थाना प्रभारी जैतवारा विजय सिंह ने बताया कि आरोपी की तलाश की जा रही है, उसे शीघ्र ही पकड़ लिया जाएगा।

सोमवती अमावस्या पर महिलाओं ने की पूजा, परिवार की सुख-समृद्धि के लिए किया उपवास

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। सोमवती अमावस्या पर महिलाओं ने अखंड सौभाग्य और परिवार की सुख-समृद्धि की कामना से व्रत रख कर पूजा-अर्चना की और फेरी लगाई।

शहर समेत जिले भर में सोमवती अमावस्या का पर्व सोमवार को आस्था और उल्लास के साथ मनाया गया। सौभाग्यवती महिलाओं ने उपवास रखा और वासुदेव (पीपल) के वृक्ष के पास बैठ कर पूजन कर पकवान का भोग लगाया।

पूजन अर्चन कर महिलाओं ने वासुदेव (पीपल) के वृक्ष की 108 बार परिक्रमा की और प्रत्येक फेरी पर अपने सामर्थ्य अनुसार हल्दी ,सुपाड़ी, फल, काजू - बादाम, मिठाई और टॉफ़ी जैसी वस्तुएं चढ़ाई। पहली बार यह व्रत - पूजन कर रही महिलाओं ने धान - पान का विधान पूरा किया। महिलाओं ने यहीं बैठ कर सोमवती अमावस्या की कथा सुनी।

एटीएम कार्ड बदलकर खाते से पैसा उड़ाने वाले 4 गिरफ्तार

आरोपी मददगार बनकर बदलते थे कार्ड, 32 एटीएम जब्त किए

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। एटीएम बूथ में पैसा निकालने के दौरान लोगों के कार्ड बदलकर उनके बैंक खातों से रकम उड़ाने वाले गिरोह का अमरपाटन थाना पुलिस ने भंडाफोड़ किया है। गिरोह के 4 सदस्यों को गिरफ्तार कर रिमांड पर लिया गया है। उनके कब्जे से नकदी और बाइक के अलावा 32 एटीएम कार्ड जब्त किए हैं।

अमरपाटन थाना क्षेत्र में एटीएम कार्ड बदलकर रुपए निकालने की घटनाओं का खुलासा कर पुलिस ने 4 बदमाशों को गिरफ्तार किया है। पकड़े गए आरोपियों में संस्कार पवार उर्फ भैयू पिता बाला साहब पवार (23) निवासी बसवडे थाना नासगोव जिला सबली महाराष्ट्र हाल मुकाम फोर्ट रोड रीवा, कृष्ण कुमार साहू उर्फ गुड्डू पिता दशरथ प्रसाद साहू (26) निवासी कोटा थाना कुसमी जिला सीधी, अजय साहू उर्फ अज्जू पिता रमेश साहू (26) निवासी गिजवार थाना मझौली जिला सीधी एवं धर्मेन्द्र साहू उर्फ निक्षित पिता श्याम सुन्दर साहू (19) निवासी रायपुर कर्चुलियान गल्ला मंडी जिला रीवा शामिल हैं। उनके कब्जे से अलग-अलग बैंक के 32 एटीएम, 8160 रुपए नकद, एक काले रंग की बिना नंबर की गाड़ी एवं चार मोबाइल जब्त किए गए हैं।

पुलिस ने बताया कि आरोपियों ने संगीता चतुर्वेदी पति शैलेन्द्र चतुर्वेदी निवासी रैकवार का एटीएम कार्ड 30 अगस्त को बदल कर उसके खाते से 25 हजार उड़ा लिए थे। इसी तरह रामकुमार प्रजापति पिता लक्ष्मण प्रजापति का एटीएम कार्ड बदल कर भी बदमाशों ने 25 हजार रुपए पार किए थे। दोनों घटनाओं की शिकायत दर्ज होने के बाद जांच के दौरान पुलिस को सीसीटीवी फुटेज से सुराग मिला था। उसमें दिखी बाइक की तलाश हुई तो आरोपी पकड़ में आ गए।

अमरपाटन टीआई केपी त्रिपाठी ने बताया कि आरोपियों से पूछताछ में पता चला है कि उन्होंने मैहर, सतना, अमरपाटन में ऐसी ही घटनाएं अंजाम दी हैं। वे सीधी, गोविंदगढ़, ब्यौहारी में एटीएम फ्रॉड एवं मारपीट तथा हत्या के मामलों में संलिप्त रहे हैं। टीआई ने बताया कि आरोपियों को एक दिन कक रिमांड पर लिया गया है। कुछ और वारदातों का खुलासा होने की संभावना है।

मैहर जिले की प्रभारी मंत्री सोमवार को बैगा परिवारो से मिलने पहुंची बैहार गांव

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। प्रदेश की पंचायत एवं ग्रामीण विकास राज्यमंत्री और मैहर जिले की प्रभारी मंत्री राधा सिंह अपने प्रभार के जिले मैहर के प्रवास के दूसरे दिन पहाड़ी की चोटी पर बसे गांव बैहार पहुंची। वहा उन्होंने गांव में निवासरत बैगा विशेष जनजाति के 11 बैगा परिवारों से मुलाकात कर संवाद किया। उन्होंने कहा कि केंद्र और राज्य सरकार विशेष जनजाति के पिछड़े और जंगल में रहने वाले परिवारों को भी विकास की मुख्य धारा में लाना चाहती हैं। प्रधानमंत्री जन मन योजना में इन सभी 11 परीवारो के सभी 48 सदस्यो को सरकार की सभी शत प्रतिशत योजनाओं का लाभ देकर उनकी आर्थिक समृद्धि और विकास के प्रयास कर रही है। उन्होंने चिन्हित परिवार की महिला और पुरुष सदस्यो से स्थानीय बोली में बातचीत करते हुए कहा की अपना पंचे आपन लडिका बच्चन का खूब पढ़ावा, बच्चन के भविष्य सुधरी और गांव के हालात भी सुधर जई।

जिले की प्रभारी मंत्री राधा सिंह सोमवार को मैहर जिले के प्रवास के दौरान प्रधानमंत्री जन मन कार्यकम के तहत मैहर जिले की ग्राम पंचायत सेमरा के चिन्हित बैगा ग्राम बैहार में आयोजित शिविर में शामिल हुई। जिला प्रशासन मैहर द्वारा इन बैगा परिवारों को मुख्यधारा में लाने 28 अगस्त से 10 सितंबर तक विभिन्न विभागों द्वारा शिविर आयोजित कर हितग्राहियों को लाभान्वित किया जा रहा है। प्रभारी मंत्री श्रीमती सिंह सोमवार को इस गांव में वन विभाग, खाद्य और उद्यानिकी विभाग के आयोजित शिविर में शामिल हुई। प्रभारी मंत्री श्रीमती सिंह ने एक पेड मां के नाम अभियान के तहत पौधरोपण भी किया। उन्होंने सभी 11 बैगा परिवारों को घरों में लगाने के लिए 5-5 पौधे अमरूद, नींबू, आंवला और मुनगा के पौधे वितरित किए। विधायक श्रीकांत चतुर्वेदी ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि शासन की योजनाओं का लाभ उठाकर जागरूक बनें। केन्द्र और राज्य सरकार आप सब को विकास की मुख्य धारा से जोडकर आर्थिक रूप से सक्षम बनायेंगी। जिला पंचायत अध्यक्ष रामखेलावन कोल ने कहा कि केन्द्र और राज्य सरकार अनुसूचित जनजाति के वनों में रहने वाले बैगा, भारिया और सहरिया विशेष जनजाति के विकास के लिए कटिबद्ध है। उन्होंने कहा कि विकसित भारत के लिए बैहार जैसे गांव भी सर्वसुविधायुक्त किये जायेंगे। कलेक्टर श्रीमती रानी बाटड़ ने बताया कि प्रधानमंत्री जन मन कार्यक्र म में मैहर जिले के दो ग्राम सेहरूआ और बैहार का चयन किया है। सेहरुआ में एक परिवार बैगा जन जाति का है, जिसमें 5 सदस्य है। इसी प्रकार बैहार में 11 बैगा परिवारों में 48 सदस्य हैं। इन सभी सदस्यों को शासकीय योजनाओं और कार्यक्रमों से शत-प्रतिशत लाभांवित किया गया है। स्वरोजगार के लिए बकरी पालन और मुर्गी पालन की यूनिट भी स्वीकृत की गई है। इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक सुधीर अग्रवाल, एसडीएम विकास सिंह, तहसीलदार जितेंद्र पटेल, जिला पंचायत सदस्य जयंती तिवारी सहित अन्य जनप्रतिनिधि तथा अधिकारी उपस्थित रहे।

भदैला-सोमवती अमावस पर चित्रकूट में आस्था का सैलाब

लाखों श्रद्धालुओं ने मंदाकिनी में डुबकी लगा कर किया दीपदान, कामतानाथ के दर्शन कर लगाई परिक्रमा

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। शिव सिद्धि योग के साथ आई भादो महीने की अमावस्या पर सोमवार को भगवान श्रीराम की तपस्थली चित्रकूट में आस्था का सैलाब उमड़ पड़ा। देश भर से लाखों श्रद्धालुओं ने चित्रकूट पहुंच कर स्नान और दर्शन - पूजन कर परिक्रमा लगाई।

भदैली और सोमवती अमावस्या के अद्भुत संयोग के बीच चित्रकूट में चल रहे मेले में शामिल हो कर पुण्य लाभ अर्जित करने देश भर से लाखों श्रद्धालु पहुंचे हैं। इनके यहां पहुंचने का सिलसिला रविवार से ही शुरू हो गया था। मेले के मद्देनजर एमपी के सतना और यूपी के चित्रकूट जिला प्रशासन तथा पुलिस ने अपने-अपने क्षेत्र में श्रद्धालुओं की सुविधा - सुरक्षा के व्यापक इंतजाम किए हैं।

कार्यपालिक मजिस्ट्रेट्स की ड्यूटी लगाई गई है और अतिरिक्त पुलिस फोर्स की तैनाती की गई है। चाक- चौबंद व्यवस्था के बीच श्रद्धालु पावन सलिला मंदाकिनी में डुबकी लगा कर दीपदान कर रहे हैं और भगवान कामतानाथ के दर्शन कर कामदगिरी पर्वत की प्रदक्षिणा कर रहे हैं।

सोमवती अमावस्या होने के कारण जहां महिलाएं अखंड सौभाग्य की कामना से परिक्रमा कर रही हैं वहीं भगवान शिव का दिन सोमवार होने के कारण कामतानाथ मंदिर के अलावा महाराजाधिराज मतगजेंद्र स्वामी के मंदिर में भी जलाभिषेक करने वालों की भीड़ लगी हुई है।

प्रशासन के एक दावे को मानें तो सोमवार की दोपहर तक यहां 9 लाख से अधिक श्रद्धालु पहुंच चुके हैं। यह संख्या देर रात तक 15 लाख के आसपास होने की संभावना जताई जा रही है।

सतना कलेक्टर अनुराग वर्मा एवं एसपी आशुतोष गुप्ता ने चित्रकूट पहुंच कर वहां चल रहे अमावस्या मेले के दौरान व्यवस्थाओं जायजा लिया। अधिकारियों ने मोटर बोट की भी सवारी की।

प्रभारी मंत्री ने किया पूर्व माध्यमिक विद्यालय का निरीक्षण

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। मध्यप्रदेश शासन की पंचायत एवं ग्रामीण विकास राज्यमंत्री और मैहर जिले की प्रभारी मंत्री राधा सिंह ने सोमवार को मैहर जिले के प्रवास के दूसरे दिन शासकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय बुढागर का आकस्मिक निरीक्षण किया। प्रभारी मंत्री राधा सिंह ने विद्यालय में जाकर कक्षा में उपस्थित विद्यार्थियों से चर्चा कर पठन-पाठन संबंधी जानकारी ली। प्रभारी मंत्री ने ग्राम बुढागर विद्यालय में शिक्षकों को बच्चों की नियमित उपस्थिति बढाने और पालकों से सतत सम्पर्क कर बच्चों की उपस्थिति पर विशेष ध्यान देने के निर्देश दिए।

मैहर की अल्ट्राटेक सीमेंट कंपनी में हादसा

पानी की टंकी फटने से मजदूर की मौत, नाराज श्रमिकों ने मचाया हंगामा, एक हफ्ते में दूसरी घटना

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। मैहर की अल्ट्राटेक सीमेंट कंपनी में एक बार फिर हुए हादसे ने एक और मजदूर की जान ले ली है। मजदूर की मौत के बाद सोमवार की सुबह यहां भड़के मजदूरों ने जमकर हंगामा किया। एक हफ्ते के अंदर अल्ट्राटेक सीमेंट में हुआ यह दूसरा हादसा है।

जानकारी के मुताबिक, मैहर में स्थित बिरला समूह की अल्ट्राटेक सीमेंट कंपनी में रविवार की रात एक मजदूर दुर्घटना का शिकार हो गया और उसकी मौत हो गई। मृतक बिहार का रहने वाला बताया जाता है। फैक्ट्री के अंदर यह हादसा सगमनिया कॉलोनी ने हुआ। बताया जाता है कि यहां बनी एक पानी की टंकी रविवार की रात अचानक फट गई। टंकी का पानी बह चला और मलबा भरभरा कर नीचे आ गिरा।

जिस जगह यह टंकी थी वहीं कुछ टीन शेड भी बने हुए हैं। मलबे की चपेट में आ कर सब कुछ धराशायी हो गया। शोर सुनकर आसपास रहे अन्य लोग दौड़ कर वहां पहुंचे। नजारा देख कर उनके होश उड़ गए। लोगों ने टीन शेड और मलबे के बीच दबे पड़े मजदूर को निकाला और बाहर ले आए। बाद में उसकी मौत हो गई। रात में ही इसकी सूचना फैक्ट्री प्रबंधन और पुलिस को दी गई।

सोमवार की सुबह जब यह खबर अन्य मजदूरों तक पहुंची तो हुजूम इकट्ठा हो गया और लोगों का गुस्सा भड़क उठा। नाराज मजदूरों ने फैक्ट्री में हंगामा शुरू कर दिया। आरोप है कि इस दौरान प्रबंधन के लोगों ने प्रदर्शनकारी मजदूरों को डराया, धमकाया। भीड़ में लोगों के बीच धक्का-मुक्की भी हुई। घंटों चले शोर शराबे के बीच पुलिस भी पहुंची। नाराज लोग मजदूर की मौत के लिए फैक्ट्री प्रबंधन को जिम्मेदार ठहराते हुए मृतक के परिजनों को मुआवजा देने, प्रबंधन के खिलाफ मुकदमा दर्ज करने की मांग पर अड़े थे।

बता दें कि एक हफ्ते के अंदर अल्ट्राटेक सीमेंट मैहर में हुई यह दूसरी घटना है जिसमें मजदूर की जान गई है। पिछले दिनों एक मशीन ऑपरेटर फैक्ट्री में ड्यूटी करते - करते दुर्घटना का शिकार हुआ था जिसे चुपचाप सतना के बिरला अस्पताल ले आया गया था जहां उसकी मौत हो गई थी। मौत के बाद उसके बेटे को अस्पताल से सूचना दी गई थी। बाद में परिजनों व मजदूरों ने मैहर थाना के सामने प्रदर्शन भी किया था।

अपर कलेक्टर ने समय-सीमा प्रकरणों की बैठक में अधिकारियों को दिये निर्देश

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में आयोजित सोमवार को समय-सीमा प्रकरणों की समीक्षा बैठक में अपर कलेक्टर स्वप्निल वानखडे ने सीएम हेल्पलाइन के लंबित प्रकरणों सहित विभागीय कार्यों की समीक्षा करते हुए संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। बैठक में आयुक्त नगर निगम शेर सिंह मीना सहित विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे। अपर कलेक्टर स्वप्निल वानखडे ने कहा कि सभी अधिकारी अधिक समय से लंबित सीएम हेल्पलाइन के आवेदनों का शत-प्रतिशत निराकरण करें। उन्होंने राजस्व नगरीय निकाय एवं जनपदवार सीएम हेल्पलाइन के प्रकरणों की समीक्षा की। उन्होंने कहा कि किसी भी विभाग की सीएम हेल्पलाइन की शिकायत नाट-अटेण्ड नहीं रहनी चाहिए। बैठक में राजस्व अभियान की समीक्षा में अपर कलेक्टर ने कहा कि अभियान में अभिलेख दुरूस्तीकरण, बंटवारा, नामांतरण में अच्छा कार्य हुआ है। इसी प्रकार नक्शा तरमीम और ई-केवायसी में काम करने की जरूरत है। नक्शा विहीन ग्रामों में नक्शा कार्य के लिए उन्होंने एसडीएम को हल्कावार पटवारियों को सेडयूल बनाकर भेजने के निर्देश दिये। जल निगम के कार्यों की समीक्षा करते हुए उन्होंने सभी जनपद के सीईओ को निर्देशित किया कि ग्राम पंचायत सचिवों के माध्यम से कार्य का वेरीफिक्रेशन करायें तथा रोड रेस्टोरेशन के कार्य को भी देखें। अपर कलेक्टर ने सार्वजनिक वितरण प्रणाली के तहत खाद्यान्न का उठाव और वितरण हाईकोर्ट और टीएल के प्रकरण की समीक्षा भी की।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया प्रकाशन रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय प्रभात बिहार कॉलोनी सतना से प्रकाशित, संपादक संदीप द्विवेदी आर.एन.आई नं.एमपीएचआईएन/2021/81683
प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9407132714, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार, सभी विवादो का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।